

तापोभूमि

मासिक



महर्षि दयानन्द सरस्वती

विष को पीकर अमृत बाँटा।

तेरा ऋणी रहे संसार॥

(निर्वाण दिवस दीपावली)

महर्षि दयानन्द की संसार को देन

महर्षि दयानन्द का जिस समय जन्म हुआ उस समय भारतवर्ष की अतीव दुरावस्था थी वैदिक धर्म का सूर्य अज्ञान के काले मेघों ने ढक लिया था और ऋषियों की सन्तान अज्ञान अन्धकार में दर-दर की ठोकें खा रही थी। भारतवर्ष अपना सर्वस्व खोकर गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, ढोंग और पाखण्ड अपने चरम पर था धर्म शास्त्रों का स्थान महाछली, कपटी, विषयी लोगों द्वारा रचित पुराणों ने ले लिया था। सन्मार्ग बिल्कुल लुप्त हो गया था। शिक्षा के मन्दिरों में ताले पड़े हुए थे, कुरूतियों का साम्राज्य व्याप्त था। वर्णाश्रम व्यवस्था जो समाज और राष्ट्र को दिशा देने वाली थी। बिल्कुल लुप्त हो गयी थी ऐसा घोर अन्धकार की अवस्था महर्षि दयानन्द का भारत भूमि पर अवतरण हुआ। इस दिव्य आत्मा में बाल्यकाल से ही सत्याग्रही जीवन को स्वीकार किया और सत्य के लिए अपना घर परिवार त्याग दिया। वर्षों ठोकर खाने के बाद महातपस्वी दंडी स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर पवित्र वेदज्ञान को प्राप्त किया जिससे उन्हें सत्य पथ का यथावत् बोध हुआ। गुरु विरजानन्द ने भी स्वामी दयानन्द को भारत दुर्दशा के मूल कारण समझाये और उन सब कारणों को उखाड़ फेंकने का निर्देश दिया। महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु के निर्देशों अक्षरशः पालन किया। सर्वप्रथम समाज को सब प्रकार समर्थ करने के लिए उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को सुदृढ़ और मजबूत करने के लिए ब्रह्मचर्य का संदेश दिया। उन्होंने उस समय बालविवाह की पद्धति का कठोरता से खण्डन किया, उनका मानना था कि जब तक पूर्ण अवस्था प्राप्त ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी कन्या का विवाह नहीं होगा तब तक समाज को एक उन्नत सन्तति का प्राप्त होना संभव नहीं है।

बाल-विवाह से सामाजिक व्यवस्था चरमरा जाती है इस बात को महर्षि दयानन्द ने बहुत ध्यान दिया। उस समय तथाकथित ब्राह्मणों को फटकारा और उनसे शास्त्रार्थ किया। उनके सामने सभी निरूत्तर हो गये। कालान्तर में सरकार ने भी उनके अभियान को स्वीकार कर बालविवाह पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया।

वे राष्ट्र का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञान को मानते थे महर्षि दयानन्द के समय विद्या पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को था। अछूत वर्ग को विद्या से सदैव दूर रखा जाता था। महर्षि दयानन्द ने विद्या से विमुख रखे गये लोगों के समर्थन में शास्त्रार्थ किये और उन्होंने सिद्ध किया कि वैदिक धर्म प्रत्येक व्यक्ति को वेदसहित प्रत्येक प्रकार की विद्या को पढ़ने का अधिकार देता है उन्होंने कहा कि जब तक किसी राष्ट्र का व्यक्ति अनपढ़ रहेगा। तब तक वह राष्ट्र कभी भी स्वतंत्रता पूर्वक अपना विकास करने में समर्थ नहीं होगा। उनको इस अभियान का उकस समय के तथाकथित ब्राह्मण वर्ग ने पुरजोर विरोध किया पर महर्षि दयानन्द के प्रबल आन्दोलन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जगह-जगह गुरुकुलों और विद्यालयों की स्थापना होने लगी और हर वर्ग के लिए विद्यामन्दिरों के द्वार खोल दिये गये कालान्तर में उनके इस पवित्र अभियान का ऐसा प्रभाव पड़ा कि सरकार ने भी अनिवार्य शिक्षा का कानून बना दिया और राष्ट्र की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो गया, नारी शिक्षा के विषय में भी महर्षि दयानन्द ने सबका ध्यान आकर्षित किया उन्होंने अपने ग्रन्थ में भी लिखा कि स्त्री और पुरुष गृहस्थ के आधार हैं। यदि उनमें से एक भी अशिक्षित रहेगा तो गृहस्थ का काम अपूर्ण ही रहेगा। माता के शिक्षित होने



ओ३म् वर्यं जयेम (ऋक्०)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका
(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष-65

संवत्सर 2076

अक्टूबर 2019

अंक 9

संस्थापक
स्व० आचार्य प्रेमभिक्षु

अनुक्रमणिका

संपादक:
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

अक्टूबर 2019

सृष्टि संवत्
1960853120

दयानन्दाब्द: 195

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा (उ० प्र०)
पिन कोड-281003

दूरभाष:
0565-2406431
मोबा० 9759804182

लेख-कविता

पृष्ठ संख्या

वेदवाणी	-डॉ० रामनाथ वेदालंकार	4-5
धैर्य	-पं० माधवराव	6-10
स्वास्थ्य चर्चा	-	11-12
कोई हमसे सीख लो	-	13-14
पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा	-	15-18
देवभूमि भारत गौरव	-महेन्द्रपाल आर्य	19-20
प्रेरणादायक प्रसंग	-खुशहालचन्द्र आर्य	21-22
स्वास्थ्य रक्षा की बीस बातें	-	23-24
उतावली के दुष्परिणाम	-	25-26
अपने विषय में अशुभ चिन्तन न कीजिये-		27
योग चिकित्सा का मूल तत्त्व	-पं. अत्रिदेव गुप्त भिषग्नल	28-31
आध्यात्मिक सफलता के लिए शिविर	-	32
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर	-	33-34

वार्षिक शुल्क 150/-

पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/- रुपये

वेदवाणी

लेखक: डॉ० रामनाथ वेदालंकार

क्षत-चिकित्सा

यदस्य हृतं विहृतं यत्पराभृतमात्मनो जग्धं यतमत्पिशाचैः।
तदग्रे विद्वान्पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः॥

-अथर्व० ५। २९। ५

शब्दार्थः—

(अस्य) इसका (यत् पिशाचैः हृतम्) जो अंग या मांस पिशाचों द्वारा हर लिया गया है, (यत् विहृतम्) जो विविध स्थानों से हरा गया है, (यत् पराभृतम्) जो उचेट दिया गया है, (यतमत्) जो (जग्धम्) खा लिया गया है, (तत्) उस अंग या मांस को (अग्रे) हे चिकित्सक (विद्वान् त्वम्) विद्वान् तू (पुनः आ भर) फिर से भर दे, हम (शरीरे) शरीर में (मांसम्) मांस को और (असुम्) प्राण को (एरयामः) प्रेरित कर देते हैं, लगा देते हैं।

भावार्थः—

यह मन्त्र कीट-प्रकरण का है, घाव को भरने का विषय इसमें प्रतिपादित है। परन्तु घाव केवल कीट से ही नहीं होता है, हिंसक जन्तुओं सिंह, व्याघ्र, रीछ आदि द्वारा भी हो सकता है, दीवार-वृक्ष-छत आदि के गिरने से भी हो सकता है, शत्रु के शस्त्रास्त्रों से भी हो सकता है, लड़ाई-झगड़े में चाकू, छुरी, भाले, तलवार आदि से भी हो सकता है। अतः मन्त्र को व्यापक अर्थों में लगाना उपयुक्त है। पिशाचों से भी केवल मांसभक्षक कीट ही नहीं, अपितु अन्य मनुष्य, शत्रु आदि भी ग्राह्य हैं। किसी घायल मनुष्य के विषय में कहा जा रहा है कि इसका जो मांस किसी ने दाँतों से काटकर या छुरी, शस्त्रास्त्र आदि से हर लिया है, उसे हम उपयुक्त औषध तथा मरहमपट्टी द्वारा भर देते हैं। 'विहृतं' में शरीर के विविध स्थानों से मांस हरे जाने की बात है। 'पराभृतं' से यह सूचित होता है कि वह मांस कटकर शरीर में लगा नहीं रहा है, प्रत्युत् शरीर से दूर जा गिरा है। 'पिशाचैः जग्धम्' से यह द्योतित होता है कि मांसभक्षक कृमियों, हिंसक जन्तुओं आदि ने खा लिया है। 'विद्वान् अग्नि' से आयुर्वेद का विद्वान्, शल्यक्रिया में कुशल, मरहमपट्टी आदि में सिद्धहस्त चिकित्सक ग्राह्य है। उसे सम्बोधन करके कहा गया है कि आप मांस के कटने से उत्पन्न इस घाव को शीघ्र पूरी तरह भर दो।

उत्तर में शल्यक्रियाविशेषज्ञ चिकित्सक कहता है कि आप चिन्ता न करो, यह लगभग निष्प्राण

हो चुका था, हम इसके शरीर में पुनः प्राणसंचार कर रहे हैं, कटे मांस से उत्पन्न घाव या व्रण का भी उपचार कर रहे हैं। कटे मांस के व्रण का उपचार दो प्रकार से हो सकता है—एक तो घाव भरनेवाले औषध, मरहम आदि के प्रयोग से, दूसरे रोगी के ही शरीर के किसी दूसरे अंग से अथवा अन्य प्राणी या मनुष्य के शरीर का मांस लेकर उसके प्रत्यारोपण द्वारा। 'आ ईरयामः' द्वारा बाहर से लाकर प्रत्यारोपण करना सूचित होता है। ❀

तपोभूमि मासिक के पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका प्रतिमाह आप तक पहुँच रही है। हमारा हर सम्भव प्रयास यही रहता है कि पत्रिका में उच्चकोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित करके आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये यह पत्रिका जन-जन तक पहुँचे। ताकि वे इसका पूर्णतया लाभ प्राप्त कर सकें। लेकिन यह तभी सम्भव है जब आप सबका सहयोग हमें मिले।

'तपोभूमि' मासिक के पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अपना वार्षिक शुल्क चालू वर्ष या पिछले वर्ष का शुल्क अभी तक नहीं भेजा है। वे शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भिजवाने की व्यवस्था करें। वार्षिक शुल्क 150/- एक सौ पचास रुपये तथा पन्द्रह वर्ष हेतु 1500/- एक हजार पाँच सौ रुपये भेजकर पत्रिका पढ़ने का लाभ उठायें।

हम आपको प्रति माह पत्रिका पहुँचाते रहेंगे। आपके सहयोग व हमारे परिश्रम से निरन्तरता बनी रहेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार जन-जन तक भी होता रहेगा।

हमें अपने ग्राहक महानुभावों से यही अपेक्षा है कि बिना विघ्न कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। साथ ही यह भी प्रार्थना है कि आप अपने परिश्रम से नवीन ग्राहक बनवाने का सौभाग्य प्राप्त करें।

—धनराशि भेजने हेतु बैंक का नाम व पता एवं खाता संख्या—

इण्डियन ओवरसीज बैंक

शाखा युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, जयसिंहपुरा, मथुरा

I F S C Code- IOBA 0001441

'सत्य प्रकाशन' खाता संख्या- 144101000002341

दान हेतु—

'श्री विरजानन्द ट्रस्ट' खाता संख्या- 144101000000351

सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार करना राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

धीर्य

लेखक: पं० माधवराव

“धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी। आपत्तिकाल परखिये चारी॥”

—गोस्वामी तुलसीदास

कान्ताकटाक्षविशिखा न दहन्ति यस्य,

चित्तं न दिहति कोपकृशनुतापः।

कर्षन्ति भूरिविषयाश्च न लोमपाशै-

लोकल्यं जयति कृत्सनमिदं स धीरः॥ —भर्तृहरि।

इस संसार में सर्व-सुख-सम्पन्न कोई नहीं पाया जाता। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी दुःख से दुःखी ही दीख पड़ता है। इस बात को कोई भी मनुष्य निश्चय-पूर्वक नहीं कह सकता कि उस पर कभी कोई संकट न आवेगा अथवा वह निरन्तर आनन्द में ही रहेगा। संपत्ति, संतति तथा विषयोपभोग की पूरी सामग्री होने पर भी प्रत्येक मनुष्य के लिए कुछ न कुछ नई चिन्ता, आवश्यकता तथा आपत्ति बनी ही रहती है। संसार की नश्वर वस्तुओं को पाकर जो मनुष्य अज्ञानवश यह आशा करता है कि उनसे उसे स्थायी सुख मिलेगा, अथवा वे वस्तुएं उस पर आने वाली आपत्तियों को टाल देने में सदैव समर्थ होंगी, उसे बार-बार दुःखी और निराश होने का मौका आता है। मनुष्य अपने जीवन में जिन शत्रुओं के विरुद्ध संग्राम करके विजय सुख का लाभ करना चाहता है वे बड़े ही प्रचंड, भयंकर तथा विकट हैं। सिवा इसके, वे हर समय आक्रमण करने के लिए तैयार भी रहते हैं। अपने को सुखी तथा शक्तिसम्पन्न देखकर इस बात का कभी विश्वास न करना चाहिए, कि शत्रु हम पर कभी आक्रमण ही न करेंगे। इस परिवर्तनशील संसार में सभी वस्तुओं और अवस्थाओं में परिवर्तन हुआ करता है। न जाने सुखी और बुद्धिमान् मनुष्य पर भी एकाएक कब संकट आ पड़े। पावस की ऋतु में किसी समय आकाश-मंडल अत्यन्त निर्मल और मेघ-रहित देखा जाता है, पर इतने ही से कोई इस बात को निश्चय के साथ नहीं कह सकता, कि अमुक समय तक कहीं पानी की बूंद भी नहीं बरसेगी। अकस्मात् आकाश की वह निरभ्रता नष्ट होकर चारों ओर घनघोर घटा छा जाती है, चारों ओर चंचल चपला के सिवा और कुछ नहीं दीख पड़ता, साथ ही मूसलधार वृष्टि होने लगती है। हमारे इस मानवी प्रपंच रूप अन्तरिक्ष की दशा भी ठीक ऐसी ही है। इसमें कुछ काल तक संकट के बादल यदि न दीख पड़ें, तो उससे यह मान लेना भूल से खाली कभी नहीं समझा जा सकता, कि सुख-किरणें उसमें सदा बनी ही रहेंगी। कौन कह सकता है कि दुःख के बादल उमड़ कर दूसरे क्षण ही संकट रूपी जल की मूसलधार वृष्टि नहीं कर सकते।

जब यह बात निश्चित ही है कि मनुष्य जीवन में संकटों का आना स्वाभाविक है, तब यह प्रश्न उठता

है कि ऐसे संकट के समय में क्या करना चाहिए? क्या किर्तव्य-विमूढ़ होकर बड़े दुःखी और उदासीन भाव से अपने कल्याण का मार्ग छोड़ देना चाहिए? कभी नहीं। यदि हमने वैसा ही किया तो फिर 'मनुष्य' की पुरुषार्थकता कब सिद्ध होगी? ऐसे संकटों के पंजे से जान बचाने के लिए जब तक धैर्य का आश्रय न लिया जायगा, तब तक विपत्तियां हमें दुःख देकर केवल नष्ट ही न करेंगी, बल्कि वे हमें चिढ़ाने को भी सदा तैयार रहेंगी। जो मनुष्य चाहता हो कि वह अपने कर्तव्यकर्म भली भांति किया करे, उसका काम बिना धैर्य के चल ही नहीं सकता। विपदार्णव को पार करने के लिए धैर्य से बढ़कर दूसरी नाव ईश्वर ने बनाई ही नहीं। मानवी जीवन-संग्राम में आगे कदम बढ़ाने के लिए और विघ्न तथा दुःखरूपी शत्रुओं के कठोर आघात सहन करने के लिए हमको धैर्य का ही कवच धारण करना चाहिए। स्मरण रहे कि धैर्यवान का अर्थ साहसी नहीं है।

हमारे जितने उद्योग और प्रयत्न होते हैं, वे सब सुख की प्राप्ति के लिए ही हुआ करते हैं। यदि हमारा वह हेतु किसी अंश में धैर्य गुण के आश्रय से सिद्ध हो सके, तो इस सुखप्रद सद्गुण का महत्व हमें अवश्य मानना चाहिए। दुःख और संकट के समय चित्त को समाधान और सांत्वना देने के लिए धैर्य धारण करने के अतिरिक्त कोई दूसरी युक्ति ही नहीं है। ऐसी अवस्था में धैर्य के बिना शान्ति मिलना कठिन है, क्योंकि मानसिक दुर्बलता के कारण चित्त सदैव भयभीत बना रहेगा। धैर्य के अभाव में, कोई बात सचमुच उतनी भयावनी न होने पर भी, काल्पनिक भयानुभव के कारण, मन में सदा खलबली मची रहती है। और, जब मनुष्य संशयग्रस्त हो जाता है तब उसे दुःख के अभाव में भी दुःख का आभास हुआ करता है। जो मनुष्य धैर्यशील होता है उसकी दशा कुदिन के फेर में भी उतनी बुरी नहीं हो सकती जितनी धैर्यहीन की उसके सुदिन में हो जाती है। वह मनुष्य अपनी अच्छी धुन में शान्त-मनस्क होकर लगा रहता है और आगे आने वाली विपत्ति के भय से पहले ही घबरा नहीं जाता, किन्तु उसके आ जाने की शंका होने पर टालने का उपाय करता है। जिस मनुष्य में धीरज नहीं होता प्रायः उसी के 'जले में नमक' छिड़का जाता है। इसके विपरीत धैर्यवान् मनुष्य का अतःकरण शान्ति, सुख, आशा और उदारता से रहित कभी नहीं पाया जाता। जैसे समुद्र के भीतरी टोले पर जो सुदृढ़ दुर्ग बना रहता है, उसे उसके आसपास के जल की पर्वत-तुल्य तरंगें थोड़ी भी हानि नहीं पहुँचा सकतीं, ठीक वैसे ही धैर्यवान् मनुष्य के चित्त रूपी दुर्ग को, प्रक्षुब्ध विपत्समुद्र की अत्यन्त भयावनी तरंगें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकतीं। पर धैर्यहीन मनुष्य के चित्त की दशा समुद्र किनारे की उस कुटी के सदृश है, जो रेती पर बनाई गई हो, जो एक ही प्रचंड जलतरंग से कंपित होकर मिट्टी में मिल जाय। देखिए, इस श्लोक में धैर्यवान् पुरुष का कैसा उत्तम अलंकारपूर्ण वर्णन है-

कदर्थिव्याधि हि धैर्यवृत्तेर्न शक्यते धैर्यगुणं प्रमार्ष्टुम्।

अधोमुखस्यापि कृतस्य क्लेर्नाधः शिखा याति कदाचिदेव॥

अर्थात् विपदुग्रस्त मनुष्य यदि धैर्यवान् हो तो उसकी धैर्यवृत्ति को कोई मिटा नहीं सकता, जैसे प्रज्वलित अग्नि को यदि कोई उलट दे तो भी ज्वाला ऊपर को ही रहती है, नीचे को नहीं।

जीवन को सुख के साथ व्यतीत करने के लिए ही नहीं, बल्कि अपने कर्तव्य कर्मों का उचित रीति से

सम्पादन करके विजय-प्राप्ति के लिए भी धैर्य की आवश्यकता होती है। कर्तव्य-पथ में विघ्न आ जाने पर डरपोक मनुष्य लोगों की अप्रसन्नता के डर के कारण अपने कर्तव्य को पूरा करने में आगा पीछा करता है और उनकी राय के प्रतिकूल कार्य करने का साहस नहीं कर सकता। फलतः वह किसी महत्व के काम को कर ही नहीं सकता। ज्यों ही उसे मालूम होता है कि अमुक काम करने से-फिर उसका करना वह भले ही निश्चित कर चुका हो-मेरी लोकप्रियता के नष्ट हो जाने का डर है, अथवा ज्यों ही कोई अधिकाररूढ़ मनुष्य उस काम के लिए असन्तोष प्रकट करके उसे डाट फटकार बतलाता है, त्योंही उसके देवता कूच कर जाते हैं। ऐसे ही समय में नीतिमत्ता और सिद्धान्त-प्रेम की अग्नि-परीक्षा होती है। ऐसे ही समय में धैर्यवान् पुरुष संकटों की परवाह न करके अपने सिद्धान्तों की रक्षा करता है और विचार-शक्ति की आज्ञा को छोड़कर दूसरे किसी की आज्ञा नहीं मानता। किसी काम को करने के लिए उसका एक बार निश्चय मात्र हो जाना चाहिए, फिर उसे पूरा करने में एक नहीं हजार विघ्न भले ही आवें, वह उनके दबाव को कुछ नहीं समझता। वह अपने निज के और ईश्वर के भरोसे को छोड़कर दूसरे किसी का तृण तुल्य भी भरोसा नहीं करता। यहाँ तक कि कर्तव्य-मार्ग में मनोदेवता के प्रोत्साहन के सिवा दूसरों की उत्तेजना की भी आशा नहीं करता। ऐसे महात्माओं को लक्ष्य करके ही भर्तृहरि ने कहा है-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा ययेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात् नीति जानने वाले चाहे निन्दा करें चाहे स्तुति, लक्ष्मी चाहे घर में बहुत सी आवे चाहे चली जाय और प्राण चाहे अभी जायँ चाहे कल्पान्त में, परन्तु धीर लोग न्याय का मार्ग छोड़ कर एक पग भी उससे बाहर नहीं चलते।

नीतिधर्ममय कर्तव्यपथ के इस तरह के कट्टर अनुयायियों की कीर्ति यदि संसार में अजरामर हो, तो इसमें अचम्भे और आश्चर्य की कोई बात ही नहीं है। पर इस तरह का सच्चा धैर्यवान और गम्भीर हृदय पुरुष ही वही हो सकता है, जिसे अपने नीति धर्म के सिद्धान्तों की सफलता योग्यता तथा अच्छेपन पर पूरा विश्वास हो और जो अपने को उन पर बलि चढ़ा देने में भाग्यवान् समझता हो। रामचन्द्र युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, प्रताप, शिवाजी आदि महात्माओं का नाम इतिहास में केवल उनके अचल सिद्धान्त प्रेम के कारण चिरंजीव हुआ है। यही सांसारिक सफलताओं का रहस्य है। संसार में नेताओं का काम बड़ा ही संकटपूर्ण रहता है, विशेषतः उन नेताओं का काम बड़ा ही कष्टमय होता है जो सच्चे समाज-सुधारक होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का उदाहरण लीजिए। उन्होंने समाजसुधार का बीड़ा उठाया था। उन्हें बिरादरी के लोग मनमाने खिजाते थे। यही नहीं, बल्कि नवीन आवश्यकताओं को तथा समय के आदेश को न समझनेवाले पुरानी लकीर के फकीर समस्त हिन्दूगण उन्हें समाज-कटक समझते थे। पर आज उसका नाम हिन्दूजाति के हितैषियों की जिह्वा पर नाच रहा है। क्यों? इसीलिए कि उनका सिद्धान्त उत्तम और परार्थपूर्ण था। उस पर वे अपने प्राणों को न्यौछावर करने की

हिम्मत रखते थे। ऐसे ज्वलन्त उदाहरण इतिहास में, और वर्तमान समय में भी, अनेक पाये जाते हैं। क्या ऐसे ईश्वरीय सिद्धान्त-प्रेम के मार्ग का निर्वाह होना धैर्य के बिना कभी सम्भव है?

जीवन-संग्राम में विजय और सफलता प्राप्त करा देने में धैर्य का बड़ा भारी भाग है। इसलिए अब यह देखना चाहिए कि इस सद्गुण का सम्पादन करने में किन-किन बातों की आवश्यकता है। सबसे पहली आवश्यकता अदूषित मनोवृत्ति और ईश्वर में दृढ़ विश्वास का होना है। जिसका मन विकारवश दूषित हो जाता है उसके चित्त में स्थिरता नहीं रहती। और मानसिक स्थिरता के न होने से इच्छा, उद्देश्य तथा सिद्धान्त क्षण-क्षण में बदला करते हैं। परिणाम इसका वही होता है जो न होना चाहिए। जिसका मन दोषों और विकारों से चंचल हो जाता है, उसके मन में चंचलता के विरोधी धैर्य का निवास नहीं हो सकता। यहां पर पाठक यह आक्षेप कर सकते हैं, कि कई बार यह बात देखी जाती है कि अपने दुष्ट हेतुओं को सिद्ध करने के पीछे पड़े हुए कई पापावतार दुरात्माओं के मन भयभीत नहीं होते। इसका क्या कारण है? उचित तो यही है कि मनोवृत्ति दूषित होने के कारण उनमें चित्त की चंचलता दीख पड़नी चाहिए, पर उलटा उनमें चित्त की चंचलता दीख पड़ती है, कि ऐसे लोगों में जो धैर्य पाया जाता है उसमें, और जिस धैर्य की इस लेख में प्रशंसा की गई है उसमें, आकाश-पाताल का अन्तर है। ऐसे लोगों को हम धैर्यवान् न कहकर साहसी अथवा राक्षस कहेंगे। इनमें जो धैर्य-सदृश वस्तु दीख पड़ती है वह सराहनीय नहीं है, क्योंकि उसकी स्थिति नीति-तत्वों के आधार पर नहीं होती। उसे हम धैर्य का नाम ही नहीं दे सकते-दुस्साहस अवश्य कह सकते हैं। ऐसे दुस्साहस का जन्म एक प्रकार की दुष्टतापूर्ण ढिठाई, आगे आने वाली आपत्तियों की उपेक्षा और सब प्रकार के अविचार से होता है। ऐसे दुस्साहसी राक्षस कभी सफल मनोरथ नहीं हो सकते, अथवा यों कहना चाहिए कि इनकी सच्ची असफलता को माप इनकी दुष्ट इच्छाओं की सफलता में ही है।

दूसरी आवश्यकत बात ईश्वर पर दृढ़ विश्वास का होना है। गाढ़े प्रसंग पर धीरज को बनाये रखकर उसे बढ़ाने में ईश्वर-निष्ठा बहुत काम आती है। इस प्रकार का विश्वास हो जाने पर कि ईश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर बनी है, वह मेरा पूरा रक्षक है, सदाचारी मनुष्य को एक प्रकार की अवर्णनीय सहायता मिलती रहती है, ईश्वर भलेमानुष को ही चाहता है। मेरे इस अच्छे काम की वह किसी न किसी रूप से सहायता अवश्य ही करेगा, मेरे कठिन समय में वह मुझे कभी न भूलेगा, इत्यादि बातों पर दृढ़ विश्वास होने के कारण घोर आपत्तिग्रसित होने पर भी धैर्यशाली मनुष्य के चित्त की स्वस्थता भंग नहीं होती। निस्सीम भक्तों का धैर्यभंग होते कभी नहीं देखा गयां प्रह्लाद और द्रौपदी की कथा सबको मालूम है। ईश्वर की सहायता और सांसारिक सफलता उन्हीं लोगों को मिल सकती है, जिन्हें अपने नीतिधर्म और ईश्वर पर दृढ़ विश्वास रहता है। इतिहास में धर्मशील और कर्मवीर पुरुषों के अनेक उदाहरण पाये जाते हैं। उन्होंने धर्म-नीति और सत्य की रक्षा के लिए हजारों दुःख और क्लेश सहें हैं, संकट और दुःख के बोझ से कभी अपने मन को व्यग्र नहीं होने दिया है और आवश्यकता होने पर अपने तन-मन-धन की आहुति देने तक की कभी नहीं नहीं की है। यह सब मन में सदैव धर्मबुद्धि के जाग्रत रहने के सामर्थ्य का फल है। यह धर्मबुद्धि ईश्वर की दयालुता पर दृढ़ विश्वास रखे बिना कभी जाग्रत नहीं हो सकती।

जीवन संग्राम में विजय की प्राप्ति के लिए धैर्य धारण करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य को केवली एक बात की सूचना और देनी है। उसे उचित है कि वह अपने मन में मनुष्य की सच्ची प्रतिष्ठा और कीर्ति के कारणों को निश्चित कर रखे। बहुतेरे लोग माना करते हैं कि केवल द्रव्य अथवा अधिकार से सच्ची प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पर यह भूल है। बहुत बड़े मूर्ख और नादान के पास भी सम्पत्ति पाई जा सकती है और उसे उच्चकोटि का अधिकार भी प्राप्त हो सकता है। इनके द्वारा कदाचित् हजारों मनुष्यों में एकाध बड़ी कठिनाई से प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है, क्योंकि ये ऐसी मदान्धता उत्पन्न करनेवाली शक्तियाँ हैं कि जिनके मिलने पर मनुष्य बहुधा अपने आपको भूलकर इनका दुरुपयोग करने लगता है। सदाचार और नैतिक तथा आध्यात्मिक योग्यता के द्वारा जो प्रतिष्ठा मिलती है वही सच्ची और चिरस्थायिनी होती है। सदाचार वह आकर्षण मन्त्र है जिस के द्वारा शत्रुओं तक में हमारे लिए पूज्यभाव पैदा होता है। ऐसे धैर्यसम्पन्न सदाचारी मनुष्यों को किसी पारितोषिक की आवश्यकता नहीं रहती। इन्हें सुख और दुःख से हर्ष या विषाद नहीं होता, केवल अपने उद्दिष्ट कार्य का ध्यान रहता है। यहाँ पर इस बात का स्मरण रखना आवश्यक है कि प्रतिकूल टीकाओं से अपने नीतिमय कार्य का त्याग कर देना एक शोचनीय कार्य होगा। दुष्ट लोग सभी की निन्दा करते हैं, अतएव वे धैर्यवान् मनुष्य की भी निन्दा उसके सदाचार और सिद्धान्त प्रेम के कारण करें तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। वे लोग उनके आचरण के रहस्य और योग्यता को समझ नहीं सकते। अतएव निन्दा करके ही अपनी अयोग्यता और असमर्थता का परिचय देते हैं। परन्तु विचारवान् लोग उनकी हजार मुख से प्रशंसा करने पर भी असन्तुष्ट नहीं होते। इन बेचारे निन्दकों को मनुष्य जीवन का मूल्य विदित नहीं रहता। अतएव सच्चे धैर्यवान् मनुष्य को ऐसे निन्दकों के कठोर वाग्बाण से हतोत्साह नहीं हो जाना चाहिए।*

महापुरुषों की जयन्ती

लालबहादुर शास्त्री	2 अक्टूबर
महात्मा गाँधी	2 अक्टूबर
रानी दुर्गावती	5 अक्टूबर
गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी	10 अक्टूबर
जयप्रकाश नारायण	11 अक्टूबर
सूर्यसेन	18 अक्टूबर
महर्षि वाल्मीकि	22 अक्टूबर
भगिनी निवोदिता	28 अक्टूबर
श्यामजी कृष्ण वर्मा	30 अक्टूबर
डॉ० होमी भाभा	30 अक्टूबर
सरदार बल्लभभाई पटेल	31 अक्टूबर

महापुरुषों की पुण्यतिथि

गुरु गोविन्दसिंह	7 अक्टूबर
जयप्रकाश नारायण	8 अक्टूबर
राममनोहर लोहिया	12 अक्टूबर
विट्ठलभाई पटेल	22 अक्टूबर
महर्षि दयानन्द सरस्वती	27 अक्टूबर
इन्दिरा गाँधी	31 अक्टूबर
8 अक्टूबर	विजयदशमी
10 अक्टूबर	डाकतार दिवस
20 अक्टूबर	आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस
27 अक्टूबर	दीपावली
28 अक्टूबर	गोवर्धन
29 अक्टूबर	भाई दूज

स्वास्थ्य चर्चा

मरे हुए बच्चे को गर्भ से निकालना

यदि बच्चा गर्भ में मर जाए तो चीरा-फाड़ी से निकालने के बजाय आयुर्वेद की शरण में आइए। अपामार्ग (ओंघा, चिरचिटा) को जड़-सहित उखाड़ लाएँ। इसकी जड़ को साफ करके 4-5 अंगुल की लम्बाई में काट लें। इसके एक सिरे पर मजबूत धागा बांधकर इस जड़ को स्त्री की योनि में रख दीजिए। डोरीवाला भाग नीचे की ओर योनि में रख दीजिए। डोलीवाला भाग नीचे की ओर योनि से बाहर लटकता रहे। कुछ ही मिनट में बच्चा गर्भ से बाहर आ जाएगा। बच्चे के बाहर आते ही धागे को खेंचकर लकड़ी को बाहर निकाल लो और घर से बाहर फेंक दो।

डाक्टरों के कान काटनेवाला अद्भुत प्रयोग है।

नोट- 1. ताजा जड़ी शीघ्र काम करती है।

2. बच्चा बाहर आते ही जड़ी को तुरन्त बाहर निकाल दें, अन्यथा गर्भाशय भी बाहर निकल आएगा।

मासिक धर्म की अधिकता

1. बीस ग्राम धनिये को 200 ग्राम पानी में औटाएँ। जब 50 ग्राम पानी शेष रह जाए तब छानकर पिला दें। इससे अधिक रक्त गिरना रुक जाता है।

2. समुद्रसोख 10 ग्राम को खूब बारीक पीसकर रख लें। प्रातः 1 ग्राम दवा ठण्डे पानी से दिया करें। 3-4 दिन में अधिक रक्त आना बन्द हो जाता है, सफल एवं अनुभूत योग है।

3. राई 50 ग्राम बारीक पीसकर रख लें। प्रतिदिन प्रातः सायं दोनों समय 2-2 ग्राम चूर्ण बकरी के दूध के साथ दिया करें। मासिक धर्म प्रारम्भ होने से दो-चार दिन पहले से देना आरम्भ करें और जब तक दवा समाप्त न हो तब तक देते रहें। मासिक धर्म अधिक होने का रोग जड़ से चला जाएगा और फिर कभी नहीं होगा।

4. सफेदा काशगरी 10 ग्राम, लाल गेरू 1 ग्राम, दोनों को अच्छी प्रकार मिलाकर शीशी में भर लें। आवश्यकता पड़ने पर 2 ग्रेन (एक रत्ती) औषधि बताशे में रखकर खिलाएँ। ऊपर से थोड़ा-सा दूध या पानी पिला दें।

अद्वितीय औषधि है। तीन मात्राओं में अवश्य आराम आ जाएगा।

5. मुलहठी का छिलका उतार एवं कूट-पीसकर चूर्ण बना लें, बस दवा तैयार है। 3 ग्राम दवा

चावल के धोवन से दिन में तीन बार दें। 4-5 दिन में पूर्ण लाभ हो जाता है।

6. राल 6 ग्राम 100 ग्राम दही में मीठा मिलाकर खिलाएँ। तीन-चार दिन में रक्त का पता भी नहीं रहता है कि कहाँ गया।

मासिक धर्म की अनियमितता

कच्चा सुहागा 3 ग्राम, केसर 2 ग्रेन। दोनों को खरल में बारीक घोटकर प्रातःकाल ठण्डे पानी के साथ दें। दूसरी मात्रा देने की शायद ही आवश्यकता पड़े। मासिक धर्म नियत समय पर और खुलकर आएगा।

मासिक धर्म से 2-3 दिन पूर्व सेवन करें।

मासिक खोलने के लिए

कलिहारी की जड़ पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से स्त्रियों की बन्द महावारी खुल जाती है।

—(शेष अगले अंक में)

पाठकों से विनम्र निवेदन

‘तपोभूमि’ मासिक पत्रिका के उन पाठकों से विनम्र निवेदन है जिन्होंने वर्ष 2017 व 2018 का वार्षिक शुल्क बार-बार के पत्र लेखन तथा फोन द्वारा सूचना देने के बाद भी अभी तक जमा नहीं कराया है। वे वर्ष 2019 के वार्षिक शुल्क के साथ अविलम्ब ‘सत्य प्रकाशन’ वेदमन्दिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा के कार्यालय को जमा करायें। शुल्क जमा न होने की स्थिति में पत्रिका बन्द कर दी जायेगी। आशा और विश्वास है कि पाठकगण अविलम्ब शुल्क भेजकर अपनी पत्रिका समयानुसार प्राप्त करते रहेंगे। जो महानुभाव ऑन लाइन द्वारा शुल्क जमा करते हैं वे फोन द्वारा कार्यालय को सूचित अवश्य करें ताकि उनका शुल्क जमा किया जा सके। वे पाठकगण धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समयानुसार वर्ष 2019 का शुल्क जमा किया है। —व्यवस्थापक

क्या ऐसे भी परिवार होते हैं?

महाकवि माघ प्रसिद्ध कवि होने के अतिरिक्त एक उदारचेता महामानव भी थे। उनके साथ उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य के अन्दर भी उदारता की यह भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। एक बार एक निर्धन व्यक्ति उनसे सहायता मांगने उनके घर पहुँचा। उसको अपनी पुत्री का विवाह करना था, पर उसके पास अपेक्षित धनराशि का अभाव था। उसकी व्यथा सुनकर माघ चिन्तित हो गए, क्योंकि उनके पास भी इतना धन नहीं था, जिससे वह उस व्यक्ति की सहायता कर पाते। माघ को चिन्तित देख उनकी माँ ने अपने कान के कुंडल उतारकर उनके हाथ पर रख दिए, ताकि उनका उपयोग कर माघ उस व्यक्ति की आर्थिक सहायता कर सकें। माघ उन कुंडलों को अपने हाथ में ले पाते कि तब तक उनकी पत्नी ने भी अपने हाथ के कड़े उतारकर माघ के हाथों में रख दिए और बोली—“माँ के कुंडल इतने बड़े कार्य के लिए पर्याप्त न होंगे, आप मेरे कड़े भी ले लें।” घर आया निर्धन व्यक्ति माघ एवं उनके परिवार की उदारता के आगे नतमस्तक हो गया। ❀

कोई हमसे सीख लो

(40)

क्यों भला आत्मा महाके, मेल से मानें मिला।
शखसियत पर वार पाना, कोई हमसे सीख लो॥

(41)

तापसिक सद् वेश पाया, है जिन्होंने योग से।
दोष उनके सर मढ़ाना, कोई हमसे सीख लो॥

(42)

सत्य की सत्ता सनातन, से समादर पार ही।
झूठ से उसको दबाना, कोई हमसे सीख लो॥

(43)

धर्म की विविधानता को, दीजिये जी से भुला।
स्वार्थ का साधन सधाना, कोई हमसे सीख लो॥

(44)

शुद्ध पतितों को कराना, ग्राह्य आत्मा से नहीं।
शास्त्र की आज्ञा भुलाना, कोई हमसे सीख लो॥

(45)

देश-बान्धव दीन खोकर, हो रहे वेदीन हा॥
पास तक उनके न जाना, कोई हमसे सीख लो॥

(46)

है जिन्हें अनुरक्ति अपने, बान्धवों की शुद्धि से।
जाति से उनको छिकाना, कोई हमसे सीख लो॥

(47)

वृद्धि कैसे हो कहो तज, आय की विधि सौख्यदा।
अन्ध बन सब कुछ लुटाना, कोई हमसे सीख लो॥

(48)

बाल विधवायें न व्याही, जायँगी निर्भीक हो।
रे उन्हें छिपछिप रुलाना, कोई हमसे सीख लो॥

(49)

भ्रूण हत्या हो रही है, क्या पता तुमको नहीं।
धर्म को इस विधि निभाना, कोई हमसे सीख लो॥

(50)

योग्य भाई एक पंक्ति में न बैठे खासकें।
छूत का छकड़ा लदाना, कोई हमसे सीख लो॥

(51)

मांस खाने और मदिरा, पान करने में भले।
शुद्धता की विधि विहाना, कोई हमसे सीख लो॥

(52)

सत्यव्रत किस भांति पाला, जा सकै कापट्य से।
हास में इस भांति आना, कोई हमसे सीख लो॥

(53)

बन्धुपन इस बात में है, दीजिये नीचे गिरा।
भाव अति ऊंचे दुराना, कोई हमसे सीख लो॥

(54)

योग्यता कर्पूर सारी, हो चुकी कब की अरे।
पंच लिख पंजा पुजाना, कोई हमसे सीख लो॥

(55)

कीजिये साहित्य का भी, सत्कवे! कर से भला।
श्रेष्ठ कविता कर सिहाना, कोई हमसे सीख लो॥

(56)

“कर्ण” जैसे तुक्कड़ों की, तोड़ दो गर्दन अभी।
न्याय भी तो शायराना, कोई हमसे सीख लो॥



गतांक से आगे-

पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

छूत के रोग

रोग साधारणतः 3 प्रकार के होते हैं-1. छूतवाले, 2. बिना छूतवाले साधारण, और 3. शरीर के ऊपर के साधारण रोग।

छूतवाले रोग बड़े भयंकर और बड़ी जल्दी फैलनेवाले होते हैं। इनसे अपने पशुओं की सदा रक्षा करते रहना चाहिये। इन रोगों से पशुओं को बचाने के लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहिये।

1. जिस इलाके में छूत की बीमारी हो गयी हो वहाँ अपने पशु न जाने दे, न वहाँ के पशु अपने गाँव में आने दें।
2. अपने पशुओं की देख-भाल ठीक से करे तथा उन्हें सड़ा-गला चारा-दाना न खिलावे।
3. जहाँ सब पशु पानी पीते हों उस तालाब या नदी में पानी न पिलाकर अपने पशुओं को कुएँ से पानी खींचकर पिलावे।
4. बीमारी वाले इलाके की खाल या चमड़ा न लावे।
5. छूत की बीमारी से मरे हुए पशु की खाल नहीं निकालना चाहिये, उसको यों ही गाड़ देना चाहिये।
6. पशु डाक्टर से अपने पशुओं को टीका लगवा ले।

1. माता (Rinderpest)

इसके कई नाम हैं, पर इसके मुख्य लक्षण हैं-आँखों से पानी और मुँह से लार गिरना, शरीर काँपना, कमर का टेढ़ी हो जाना, मुँह से छाले पड़ना और अत्यन्त बदबूदार पतला गोबर होना और उसमें कुछ खून आना।

इसकी सर्वश्रेष्ठ दवा टीका लगवाना है। अच्छे जानवरों को 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड' से रिंडरपेस्ट का टीका लगवा देने पर फिर जन्मभर यह बीमारी नहीं आती। रोग हो गया हो तो उसकी दवाइयाँ ये हैं-

1. रात को मिट्टी के बर्तन में एक पाव आंवला भिगोकर सबेरे छान लें, फिर उस पानी में एक पाव दही, एक छटांक ईसबगोल और आध पाव शक्कर डालकर दिन में दो बार खिलावे। आंवला न मिले तो धनिया का पानी काम में लावें।
2. कत्या आधी छटांक, सोंठ आधी छटांक, अफीम 2 आने भर, खड़िया मिट्टी 1 छटांक, देशी

शराब 1 छटांक। इन सबको आधा सेर अलसी के माँड़ में मिलाकर दिन में दो बार पिलावें।

3. बांसी घास के बीज 1 सेर बारीक पिसवाकर रख ले और आधा पाव सबेरे तथा आधा पाव शाम को दही या मट्ठा के साथ देने से बड़ा लाभ होता है।

4. 1 ओंस कपूर और 2 ओंस कलमी शोरा को 1 पाव देशी शराब में मिलाकर पिलाना चाहिये। रोगी पशु को मुलायम चारा और चावल का माँड़ आदि खाने को देना चाहिये।

2. जहरी बुखार अथवा गड़ी वा सूत (Anthrax)

यह रोग रक्त के विकार से होता है। पशु को बेचैनी होती है, आँखें बाहर निकली पड़ती हैं, ज्वर बहुत हो जाता है और गोबर काले रक्त से सना हुआ होता है। यह रोग होने पर पशु चिकित्सक को शीघ्र बुलाना चाहिये और तब तक नीचे लिखी दवाओं में से कोई पिलानी चाहिये—

1. तारपीन का तेल आधी छटांक।
2. फिनाइल आधी छटांक।
3. अलसी का तेल आधी छटांक।
4. गरम पानी आध सेर।

3. गलाघोंटू (Haemorrhagic Septicaemia)

यह रोग क्या है मानो मृत्यु की सूचना है। इससे गले में सूजन हो जाती है और पशु का गला घुटने लगता है। प्रायः यह आश्विन महीने में होता है। यह रोग रक्त-दोष से होता है। नाक-मुँह से लार टपकती है। मुँह में दुर्गन्ध और जीभ पर घाव हो जाता है। गोबर-मूत्र बंद हो जाता है। इसकी दो-तीन दवाइयाँ हैं, सम्भव है लाभ कर जायँ।

1. दो सेर घी, 1 सेर एप्सम साल्ट, 1 पाव काली मिर्च और 1 पाव काला जीरा मिलाकर पिला दें।
2. जमालगोटे का तेल 30 बूँद, मीठा तेल 5 छटांक और अलसी का तेल 5 छटांक पिलावे तथा फिटकरी के पानी से मुँह धोवे।

3. सूजन की जगह गर्म लोहे से दाग दे और बाद को 2 छटांक देशी शराब, आधी छटांक सोंठ और आधी छटांक काली मिर्च मिलाकर पिलाना चाहिये।

4. गन्धक का चूर्ण 2 तोले तथा सोंठ का चूर्ण 1 तोला आध सेर भात के या तीसी के माँड़ के साथ मिलाकर खिलाना चाहिये। इससे दस्त होकर रोग भिट जाता है।

नोट— पांच सेर जल में डेढ़ पाव तीसी डालकर नरम आँच से घंटा भर उबालें। उबालते समय बराबर हिलाते रहना चाहिये, नहीं तो जल जायगी। फिर पतले कपड़े से छान लें। बस, यही तीसी का मांड है।

4. फेफड़े का बुखार या छूत का निमोनिया (Contagious Pleuro-Pneumonia)

यह रोग रोगी पशु से छू जाने, उसके फोड़ा-फुंसी की मवाद लगने या उसके मुँह के सामने साँस लेने से होता है। इससे फेफड़े पर असर होता है। पशु की भूख कम हो जाती है, दूध घट जाता है, हल्क ज्वर सदा बना रहता है। धीरे-धीरे पशु अशक्त होकर पैर पीटने लगता है।

बुखार की दवा ही इसमें देनी चाहिये। नीम, सफेदा, मरुआ के पत्ते या तारपीन का तेल पानी में डालकर उबालिये और उसकी भाप में पशु को साँस लेने दीजिये। 1 हिस्सा तारपीन का तेल 10 हिस्सा तिल के तेल में मिलाकर छाती पर मालिश करनी चाहिये।

ऐसे रोगी पशु का दूध नहीं पीना चाहिये। बहुत लाचारी हो तो खूब उबाल लेना चाहिये।

5. खुर तथा मुँह का पकना (Foot and Mouth diseases)

इस रोग में पशु के मुँह तथा खुर में घाव हो जाते हैं, जिससे पशु चारा-पानी छोड़ देता है और निर्बल हो जाता है। यह रोग हवा के द्वारा भी फैलता है। एक पशु को होते ही बहुतों को हो जाता है।

1. अमकली आधा पाव, कटेली पीली का फूल 1 छटांक इन दोनों को औंटाकर काढ़ा बनाकर पिलावे।

2. पुराना गुड़ 1 सेर तथा सौंफ 1 पाव 1 सेर पानी में औंटाकर पिलावे।

3. आधा सेर एप्सम साल्ट गर्म पानी में डालकर पिलाना चाहिये।

उपर्युक्त दस्तावर दवाइयाँ पेट साफ करने के लिये हैं। इसके बाद और दवा भी करनी चाहिये-

1. आंवले के पानी, बबूल की छाल उबाले हुए पानी, फिटकरी या सुहागे के पानी अथवा तूतिया के पानी से मुँह और पैर धोवे। आंवले का पानी पिलावे। नीम का तेल या कोलतार पैरों के घाव पर लगावे।

2. खड़िया मिट्टी 2 छटांक, कोयला आधी छटांक, फिटकरी आधी छटांक, तूतिया (नीलाथोथा) चौथाई छटांक, इसके चूरन को घाव पर भुरभुराना चाहिये।

3. कपूर तारपीन का तेल, नीलाथोथा और पत्थर का कोयला मिलाकर घाव पर लगाना चाहिये।

4. बेर के पत्तों को उबालकर उस जल से खुरों को धोना चाहिये। खाने के लिये सूखी घास, चोकर या सहज पचनेवाली चीज देनी चाहिये।

6. छूत से गर्भ गिरना (Contagious Abortion)

समय से पहले ही गाय-भैंसों का बच्चा फेंक देना साधारण बात है, किन्तु यह भयानक रोग है। आगे चलकर यह अन्य पशुओं में भी फैल जाता है। तेज भागने से, छलांग मारने से, मर्मस्थल पर चोट लग जाने से, तोप के शब्द से तथा किसी विषैली चीज के खाने से गर्भपात हो जाता है।

सबसे पहले, गिरे हुए बच्चे को अलग कर देना चाहिये। मरा बच्चा हो तो दूर गड्डे में दबवा देना चाहिये। गरम पानी में पोटस, फिनाइल अथवा नीम के पत्ते डालकर पशु के गर्भ स्थान को पिचकारी द्वारा धो देना चाहिये। 8 बूंद कार्बोलिक एसिड गरम पानी में डालकर पशु को पिलाना चाहिये। पीने को गरम पानी दीजिये। पशु को 1 महीने तक सांड के पास न जाने दीजिये। गर्भपात के साथ पशु ने जेर न फेंका हो तो निम्नलिखित दवाओं से उसे अवश्य निकालने का प्रयत्न करना चाहिये।

1. पुराना गुड़ या साफ शीरा 2 सेर, अजवाइन 2 छटांक, सोंठ 2 छटांक, पीपल 1 छटांक और पीपलामूल आधी छटांक-सबका काढ़ा बनाकर गर्मी में केवल रात को और सर्दी में दो बार देना चाहिये।

2. जंगली तरोई 1 पाव, नमक आधा पाव, अजवाइन आधा पाव तथा गरम पानी आधा सेर दिन में दो बार देना उपयोगी माना गया है।

3. एक सेर मिश्री के टुकड़े-टुकड़े करके गाय को खिला दे, इसके पीछे बहुत-सा पानी पिलाने से जेर अवश्य निकल जाता है।

4. दो सेर छिलके सहित धान खिलाने से भी जेर गिर जाता है।

5. दो सेर तिल खिलाना भी लाभदायक है।

7. खूनी पेशाब (Red Water)

यह रोग भी कीटाणुओं द्वारा खून में विकार पैदा होने से होता है। बीमार पशु को काटकर मच्छर जब अच्छे पशु को काटता है, तब उसे भी हो जाता है। पशु को तेज बुखार हो जाता है, आँखें पीली पड़ जाती हैं और पेशाब में खून आता है।

इस रोग में एक नीली दवा का-जिसे 'ट्रिपनब्लू' (Trypan Blue) कहते हैं-इंजेक्शन दिया जाता है। नीचे लिखी दवा से भी लाभ होता है-

भात के माँड़ के साथ डेढ़ छटांक गुड़ और एक छटांक देशी शराब मिलाकर पिलाना चाहिये।

8. दूध का ज्वर (Milk-Fever)

इस रोग में पशु की आँखें चढ़ जाती हैं, वह खड़ा नहीं रह सकता, पैर पेट के नीचे सिकोड़ लेता है और सिर एक ओर मोड़ लेता है। गर्दन सीधी करने पर फिर वैसा ही कर लेता है। थन सूज जाते हैं और पशु घबराता है।

रसकपूर की उड़द के बराबर डली हरे केले को चीरकर उसके बीच में रख दें और पशु को खिला दें। थोड़े कपूरयुक्त या सादे तेल की मालिश करनी चाहिये।

-(शेष अगले अंक में)

देवभूमि भारत गौरव

लेखक: महेन्द्रपाल आर्य, (सिं.ई.सेवा निवृत्त)

इस देवभूमि भारत को ईश्वर ने आदि सृष्टि में निवास के लिये आर्यों को प्रदान किया था। “अहम भूमिम् अददाय आर्याय” भारत के चार ऋषियों के अन्तःकरण में चारों वेद के द्वारा अपना विज्ञान (विशेष ज्ञान) प्रकाशित करने का सौभाग्य भी ईश्वर ने इस देवभूमि भारत को प्रदान किया। आर्यों ने ही इस ईश्वरीय ज्ञान को सारे संसार में फैलाया। इसी कारण लाखों वर्ष पूर्व महर्षि मनु ने यह घोषणा करके संसार के समस्त मनुष्यों को यह आदेश दिया था कि आप सब लोग आर्यावर्त के ब्राह्मण आचार्यों से अपने-अपने कर्तव्य धर्म की शिक्षा ग्रहण करें।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा॥ -(मनु. 2/20)

तत्समय से ही संसार के लोग भारत आकर धर्म-कर्तव्यों की शिक्षा ग्रहण किया करते थे। भारत विश्व गुरु कहलाता था।

उत्थान पतन यह प्रकृति का नियम है। महर्षि दयानन्द ने कहा था-महाभारत के युद्ध से एक सहस्र वर्ष पूर्व से ही भारत पतन के मार्ग पर चल पड़ा था। महाभारत के लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व हुए युद्ध के दुष्परिणाम से मुक्त न हो सका। महाभारत के युद्ध के भयंकर परिणामस्वरूप वैदिक संस्कृति की सभी उत्तम परम्पराओं का लोप हो गया। आश्रम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, पंच महायज्ञ परम्परा, संस्कार कर्म व्यवस्था सभी समाप्त हो गयी। अवैदिक संस्कृति वाले जन संघटन उत्पन्न हो गये। इन अवैदिक जातियों के संक्रामण का प्रभाव तथा पराधीनता ने इस समस्या को विस्तार दे दिया। जिससे भारत को इसे अवैदिक विचारों से मुक्त होने का अवसर न मिल सका।

एक समय भारत देश विज्ञान, कला, विद्या, सभ्यता और संस्कृति का विश्व का केन्द्र था। इस बात को संसार के सभी निष्पक्ष विद्वान मानते हैं कि भारत पूर्व में दर्शनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, खगोलज्योतिषशास्त्र, गणितशास्त्र में उन्नति प्राप्त था तथा यूनान अरब तथा यूरोप ने भारत से इन विद्याओं को सीखा। ये सभी देश जीवन के शाश्वत मूल्यों नियमों की जानकारी के लिये भारत के ऋषी थे।

जब महर्षि सनत्कुमार ने ऋषिवर नारद जी से पूछा आपने अब तक कौन-कौन सी विद्या पढ़ी हैं तो नारद जी ने उत्तर दिया, “ऋषिवर मैंने अभी तक ऋग, यजु, अथर्व और सामवेद, इतिहास, पुराण, वेदों के अर्थ विषयक वेदांग ग्रंथ, पितृविद्या, राशिविद्या, देवविद्या, निधिविद्या, वाको वाक्य गायनविद्या, ब्रह्मविद्या, भूतविद्या (विष्णु विज्ञान), नक्षत्रविद्या, क्षत्रविद्या, सर्पविद्या और देवजन विद्या का अध्ययन किया है।

महर्षि भरद्वाज रचित “वृहद् विमान शास्त्र” अब भी खण्डित अवस्था में मिलता है। वायु विमान के आविष्कार से पूर्व पाश्चात्य विचारक रामायण के पुष्पक विमान के वर्णन को कपोल कल्पित बताया करते थे। लेकिन अब वे भी रावण का पुष्पक विमान द्वारा आकाश गमन स्वीकार करते हैं। क्रूरकाल की छाया तथा पराधीनता ने हमें अपनी संस्कृति तथा सभ्यता से विमुख कर दिया। इतिहास से पता चलता है कि विदेशी आक्रान्ताओं ने हमारे देश के अनेक बड़े-बड़े पुस्तकालयों को जलवा दिया। कुतुबुद्दीन ने बिहार का हिन्दुओं का कदीमी पुस्तकालय अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जिसमें विभिन्न विद्याओं की सहस्रों पुस्तकें मौजूद थीं। सन् 1212 में वख्तियार खिलजी के सेना नायक मोहम्मदबिनसम ने उदन्तापुरी, बिहार, नालन्दा और बिहार का विशाल पुस्तकालय जलवा दिया। अलाउद्दीन खिलजी ने आन्हिलवाड पाटन का विश्व विख्यात पुस्तकालय जलवा दिया। फिरोज तुगलक और औरंगजेब जहाँ भी संस्कृत पुस्तकें देखता जलवा देता था। इस प्रकार भारत की उन्नति का रहा सहा आधार भी जाता रहा। ईसायत, इस्लामियत तथा कम्युनिज्म की आंधी ने विश्व की दुर्दशा करने में आग में घी डालने का काम किया। आज स्थिति यह है कि विश्व के किसी भी कोने में सुख शान्ति का वातावरण नहीं।

महाराज अश्वपति के यहाँ ऋषि सत्ययज्ञ, इन्द्रद्युम्न तथा उद्दालक आदि ऋषि आये तो महाराजा ने उनका यथोचित आदर सत्कार किया तथा यहाँ भोजन करने तथा विश्राम करने का आग्रह किया। ऋषियों ने राजा का अन्न पाप का समझकर भोजन करने में संकोच तथा विवशता प्रकट की। तब महाराज अश्वपति ने उन अतिथि ऋषियों से कहा, “मेरे राज्य में न तो कोई मद्यप (शराबी) है और न कोई चोर ही है। न कोई कृपण या कायर है, न कोई अहिताग्नि है और न कोई व्यभिचारी पुरुष है तो व्यभिचारणी स्त्री का तो प्रश्न ही क्या?”

हे ऋषिगण! आप निश्चिन्त होकर मेरा आतिथ्य स्वीकार करें। आप निःसंकोच भोजन ग्रहण करें। क्या आज संसार में ऐसा कोई राष्ट्राध्यक्ष है जो इस प्रकार की घोषणा कर सके। एक समय ऐसा भारत था तब भारत विश्व गुरु के पद पर शोभायमान था। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है—

हाँ वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमोर है।
 ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है।।
 भगवान की भवभूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
 विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यहां विस्तार है।।

परन्तु आज के भारत तथा प्राचीन भारत में बड़ा विरोधाभास है। ऐसा क्या हो गया और क्यों हो गया? कि हमसे संभलते नहीं बन पा रहा। शायद हमने अपनी संस्कृति, सभ्यता अपने ऋषियों, आचार्यों को भुला दिया। अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करना हमारा लक्ष्य होना चाहिये। भारत पुनः अपने पुराने स्वरूप को प्राप्त कर उन्नति और समृद्धि के शिखर पर पहुंचे। ऐसा हम भारतीयों का प्रयास

—शेष पृष्ठ सं. 24 पर

महर्षि दयानन्द के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग

लेखक: सुधाहालयन्द्र आर्य, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता

महर्षि दयानन्द के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग निम्नलिखित हैं—

1. मैं केवल शास्त्रार्थ ही नहीं जानता, शस्त्रार्थ करना भी जानता हूँ— महर्षि जी अजमेर से कृष्णगढ़ पहुंचे। वहां के राजा बल्लभमत के अनुयायी थे। महर्षि जी ने जब भागवत का खण्डन आरम्भ किया तो राजा की तयोरियां चढ़ गईं। उन्होंने उपद्रव क महर्षि जी को कृष्णगढ़ से बाहर करने की योजना बनाई। महर्षि जी के पास भेजने के लिए कुछ पण्डित तैयार किये और उनके साथ एक उपद्रवी ठाकुर गोपालसिंह को भेज दिया। धर्मचर्चा करना उनका उद्देश्य नहीं था। वे यह जानते थे कि महर्षि जी के अथाह ज्ञान सागर में उनके पैर नहीं टिक पाएँगे। उनके हाव-भाव देखकर महर्षि जी को स्थिति समझते देर न लगी। वे अपने आसन पर विराजमान हो गये। संक्षिप्त चर्चा के बाद आगन्तुकों ने योजनानुसार हुल्लड़ आरम्भ कर दिया। महर्षि जी स्थिति से निपटने के लिए तैयार थे। वे अपने आसन पर तनकर खड़े हो गये और बोले—मैं केवल शास्त्रार्थ करना ही नहीं जानता, शस्त्रार्थ करना भी जानता हूँ।

2. मैं राजमहलों में नहीं ठहरता हूँ— महाराजा जयपुर को जब यह जानकारी मिली कि महर्षिजी जयपुर में पधारे हुए हैं तो उन्होंने व्यास बक्सीराम और ठाकुर रणजीत को भेजकर प्रार्थना की कि महर्षि जी मेरा आतिथ्य स्वीकार कर राजमन्दिर में निवास करें। यहाँ उनकी सुख-सुविधा में कोई त्रुटि न होने पायेगी। महाराजा जयपुर का निमन्त्रण महर्षि ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि मैं राजमहलों में नहीं ठहरता हूँ।

3. मैं तो लोगों को बन्धनमुक्त करने आया हूँ, मेरे कारण कोई बन्धन में क्यों रहे— महर्षि जी की बोलने की शैली से प्रबुद्ध लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। उनके श्रोताओं में हर वर्ग और सम्प्रदाय के लोग सम्मिलित होते थे। इन्हीं श्रोताओं में वहाँ के तहसीलदार सैयद मुहम्मद नित्य ही महर्षि जी के उपदेश सुनने के लिए आते थे। वे महर्षि के भक्त हो गये थे। एक दिन उन्हें जानकारी मिली कि किसी धर्मान्ध ब्राह्मण ने पान में स्वामी जी को विष दे दिया है। उन्होंने उस ब्राह्मण की खोज की और उसे कारावास में डाल दिया। यद्यपि न्यौली क्रिया से महर्षि जी ने विष निकाल दिया था और वे पूर्णतः स्वस्थ हो गये थे। महर्षि जी को भी इस घटना की जानकारी मिल गई। अगले दिन जब तहसीलदार साहब महर्षि जी के समीप पहुंचे तो महर्षि जी ने उनसे कहा—“आपने एक व्यक्ति को कारावास में डाल दिया है। यह अच्छा नहीं किया।” तहसीलदार साहब ने विनम्र भाव से कहा—“उसने महाराज को विष देने का घोर अपराध किया है।”

महर्षि ने कहा—“यह तो ठीक है, परन्तु मैं तो लोगों को बन्धनमुक्त कराने के लिए आया हूँ। मेरे कारण कोई बन्धन में क्यों रहे?”

तहसीलदार सैयद मुहम्मद, महर्षि जी की उदार भावना से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने जाते ही उस ब्राह्मण को मुक्त कर दिया।

4. शीत निवारण में योग का प्रभाव व अभ्यास- उतरते माह के शीत-भरे दिन, हल्की पुरवैया के शीतल झोंके, रात का दूसरा प्रहर और गंगा के किनारे की ठण्डी रेत, उस पर लंगोटी लगाए पद्मासनस्थ साधना-सिद्धि में संलग्न ऋषि दयानन्द तभी बदायूँ के कलैक्टर अपने एक पादरी मित्र के साथ आखेट के लिए आ निकले। शरीर को कंपा देने वाले शीत में निर्वस्त्र साधु को ध्यान-मग्न देखा तो उनके भव्य मुखमण्डल को वे उस समय तक निहारते रहे, जिस समय तक ऋषि जी का ध्यान भंग न हुआ। आंख खुलते ही विनम्र भाव से उन्होंने महर्षि जी को आभिनन्दन किया और बोले-“इस हाड़ कंपा देने वाली शीत-रात्रि में आप बिना वस्त्र अचल बैठे अपने ध्यान में मग्न हैं, जबकि हम लोग ऊनी वस्त्र पहनने के पश्चात् भी ठण्ड से अपने शरीर में कम्पन अनुभव कर रहे हैं। आपको शीत भरे मौसम में भी ठण्ड नहीं सताती, इसका कारण हमें समझाइए।”

महर्षि जी मुस्कुराए और उनसे कहा-“योग का प्रभाव और शरीर का अभ्यास ही इसका कारण है। जिस प्रकार आपने इस शीत में भी गर्म वस्त्रों से अपना मुख नहीं ढांपा फिर भी उसे ठण्ड नहीं लगती। इसलिए कि मुख को शीत सहने का अभ्यास हो गया है, इसी प्रकार मेरे पूरे शरीर को शीत सहने का अभ्यास हो गया है।”

(धन्य है महर्षि जी की निरभिमानता, यदि दूसरा कोई होता तो अपने योग बल की बड़ी प्रशंसा करता।)

5. यह रोटी नाई की नहीं, गेहूँ की है- चासी के समीप ठहर कर कुछ समय के पश्चात् महर्षि जी अनूपशहर (बुलन्दशहर) आ विराजे। वे छुआछूत और जाति-पांति के विरोधी थे। उनका दयालु हृदय सभी को समभाव से देखता था। अनूपशहर का उमेदा नाई महर्षि जी का भक्त हो गया था। महर्षि जी का यह नियम था कि जो भक्त श्रद्धाभाव से प्रथम भोजन उनकी सेवा में ले आये, वे उसे ही ग्रहण कर लेते थे। एक दिन उमेदा के मन में भी महाराज श्री को भोजन कराने इच्छा हुई। प्रीतिपूर्वक अपनी गृहणी से भोजन बनवाकर श्री चरणों में उपस्थित हुआ और भोजन कर लेने की प्रार्थना की। महर्षि जी ने शान्त भाव से भोजन करना आरम्भ कर दिया। उस समय महर्षि के समीप कुछ ब्राह्मण भी धर्म चर्चा का आनन्द ले रहे थे। उन्होंने आश्चर्य से महर्षि जी की ओर देखकर कहा-“महर्षि जी आप क्या कर रहे हैं? यह तो नाई है। आप नाई की रोटियाँ खा रहे हो।”

महर्षि जी ने उनकी ओर बिना देखे ही उत्तर दिया-“नहीं, मैं नाई की रोटियाँ नहीं खा रहा हूँ। मैं तो गेहूँ की रोटियाँ खा रहा हूँ।”

6. सत्यासत्य जानते हैं, पर मानते नहीं- इन दिनों पं० हेमचन्द्र, महर्षि जी से आर्य ग्रन्थों का अध्ययन

-शेष पृष्ठ सं. 26 पर

स्वास्थ्य रक्षा की बीस बातें

1. ब्रह्ममुहूर्त में उठने से शरीर में स्फूर्ति कान्ति और तेज की वृद्धि होती है।
2. रात्रि को ताम्र पात्र में रखा बासा जल यदि नाक द्वारा पिया जाय तो नेत्रों की ज्योति स्थिर होगी।
3. शौच जाते समय मुंह न खोलिये अन्यथा दुर्गन्ध के कीटाणु मुख मार्ग से श्वास नलिका द्वारा शरीर में प्रविष्ट होकर रोग उत्पन्न करेंगे।
4. मुख की सफाई प्रातः सायं खूब अच्छी तरह करनी चाहिये। तीनों तरफ से दांत, जीभ, तालु जीभ के नीचे का भाग, गला अच्छी तरह साफ करना चाहिये। वृक्ष की दातुन सर्वश्रेष्ठ उपाय है। कोई बढ़िया मंजन भी अच्छा है। सरसों का तेल दांतों पर मलते रहना उपयोगी है। बुश से दांतों को हानि होती है। भोजन के बाद दांतों की सफाई कीजिये। इससे दांत बुढ़ापे तक बने रहेंगे।
5. मुंह में पानी भरकर आंखों पर ठण्डे पानी के छपके दिन में तीन बार देने से आंखों के रोग नहीं रहते।
6. यथासंभव ठण्डे जल से ही स्नान कीजिये। स्नान करते समय पहले सिर भिगोना चाहिये पांव नहीं। इससे शरीर में स्फूर्ति और कार्यक्षमता बढ़ती है। रक्त का शरीर में भली प्रकार अभिसरण होता है।
7. भोजन के समय जल न पीये तो अच्छा है। आधे घण्टे बाद पीना स्वास्थ्यप्रद है। यदि बिना पीये न रहा जाय तो केवल एक ही बार मध्य में पीयें वह भी कम मात्रा में।
8. दूध के साथ नमकीन पदार्थ, मूली के साथ दूध, खरबूजा के बाद दूध सेवन न करें। ये विष बनकर शरीर को नष्ट कर सकते हैं।
9. भोजन करने के बाद थोड़ा विश्राम अवश्य करना चाहिये। कुछ देर बांयी करवट लेटना उचित है सो जाना हानिकारक होगा।
10. भोजन के तुरन्त बाद पढ़ना-लिखना या श्रम करना रोग उत्पन्न करता है। आधा घण्टे के बाद ही काम में लगना चाहिये।
11. दिन छिपते समय पढ़ने-लिखने से आंखों की ज्योति निर्मूल हो जाती है। इसी प्रकार चलती हुई तेज सवारियों में पढ़ना भी बुरा है।
12. मादक द्रव्य मनुष्य के शत्रु हैं। शराब, गांजा, चरस, भांग, अफीम, चाय, काफी आदि पदार्थ स्वास्थ्य के शत्रु हैं। रोगों को उत्पन्न करके आयुष्य का नाश करते हैं।
13. गैस की शिकायत वालों को भोजन के पूर्व लवणयुक्त अदरक या नींबू का रस लेकर भोजन आरम्भ करना चाहिये।

14. खड़े होकर पानी न पीयें। इससे पेट और पावों की अनेक बीमारियां होती हैं। आड़े-टेढ़े बैठकर भी जल-पान हानिकारक है। सीधे स्वस्थ बैठकर पानी पीना चाहिये।

15. जब प्यास लगे तब जल पीओ और भूख लगे तब भोजन करो। भूख में पानी और प्यास में भोजन स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है।

16. शरीर के वेगों को रोकने से अनेक रोगों की उत्पत्ति होती है। इसलिये भूख, प्यास, शौच, पेशाब, पाद, छींक, जम्हाई, अंगड़ाई आदि वेगों को रोकना ठीक नहीं है।

17. शुद्ध दूध अत्यन्त बलप्रद होता है स्वास्थ्य की रक्षा के लिये दूध का सेवन परमावश्यक है। दूध अति शुद्ध होना जरूरी है। दूध में अशुद्ध अंगुली डालने से वह विष बन जाता है।

18. दीर्घायु और स्वास्थ्य की कामना वाले लोगों को (यथा रक्तचाप आदि की शिकायत वाले व्यक्तियों को) प्रातः काल सूर्योदय के समय गांव से दूर जंगल में टहलने जाना चाहिये। उदित सूर्य की जीवनदायिनी किरणों के प्रकाश में बैठकर जीवनीशक्ति प्राप्त करनी चाहिये।

19. प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्ति और उम्र के अनुसार नित्य उपयोगी व्यायाम करना चाहिये। नवम्बर से मार्च तक अधिक और उसके बाद कम मात्रा में व्यायाम उपयोगी है। ग्रीष्म तथा वर्षा में व्यायाम बहुत ही हल्का करना चाहिये। व्यायाम से शरीर हृष्ट-पुष्ट, दृढ़, सहनशील और रोगों से जूझने की क्षमता युक्त हो जाता है। स्मरण रहे कि शक्ति से अधिक व्यायाम रोगोत्पादक और घातक बन जाता है।

20. रात्रि जागरण रोगोत्पादक तथा आयुनाशक है। अतः समय पर सोकर समय पर उठ जाना चाहिये।



पृष्ठ सं. 20 का शेष-

होना चाहिये। इसमें हमारा भी कल्याण है विश्व का भी कल्याण है। हम तब ही सुख शान्ति से रह सकते हैं जबकि हमारे अपने पड़ोसी देश भी सुखी हों। महर्षि दयानन्द कहते हैं "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये वरन् सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये" (आर्यसमाज का नियम)

अन्त में, स्वहित में, समाज हित में, राष्ट्रहित और विश्व हित में इस समस्या पर विचार करना चाहिये। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में कहें तो-

हम कौन थे क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी।

आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी॥

-(भारत भारती श्री मैथिलीशरण गुप्त जी)



उतावली के दुष्परिणाम

कहावत है कि जल्दी का काम शैतान का होता है। यहाँ जल्दी से तात्पर्य उतावली से ही है। सचमुच उतावली में किया गया काम कभी अच्छा नहीं होता।

कुछ लोग स्वभाव से ही जल्दबाज होते हैं। कुछ लोग विशेष अवसरों पर जल्दी मचाने लगते हैं। लेकिन यह दोनों तरह की उतावली या जल्दबाजी से किया काम अधिक देर में पूरा होता है।

जल्दबाज व्यक्ति कम समय में अधिक काम कर देना चाहता है। इसी कारण वह जल्दी मचाता है। परन्तु अनुभव से ज्ञात हुआ है कि जल्दबाजी से काम अधिक देर में होता है।

तेजी और जल्दबाजी दो सर्वथा अलग-2 चीजें हैं।

एक टाइपिस्ट बहुत तेज टाइप करता था। इससे तेज टाइप का रहस्य पूछने पर उसने बताया था, कि तेज टाइप करने के लिए थोड़ा धीरे टाइप करना जरूरी है। अर्थात् यदि आप जल्दी मचाएँगे तो प्रति मिनट कम शब्द टाइप होंगे। इसके विपरीत धैर्यपूर्वक टाइप करेंगे, तो अधिक शब्द टाइप होंगे।

वह टाइपिस्ट यह रहस्य जानता था, कि तेजी और जल्दबाजी एक ही चीज नहीं है। पहली एक कला है, तो दूसरी फूहड़पन। धैर्यपूर्वक कार्यरत रहने से सिद्धि शीघ्र मिलती है, काम अच्छा होता है। इसके विपरीत, जल्दबाजी या उतावली से काम देर में और खराब होता है।

ऐसा क्यों होता है? जब आप किसी काम को जल्दी-2 कर लेना चाहते हैं, तो देर क्यों हो जाती है?

बहुत सीधी सी बात है। जब आप जल्दी मचाने लगते हैं, तो आपके मस्तिष्क की शक्ति बंट जाती है। उसका एक अंश इसी काम में व्यस्त रहता है, कि वह आपको अपना हाथ अधिकाधिक तेज चलाने को, काम जल्दी-2 करने को प्रेरित करता रहे। इस प्रकार उसकी पूरी शक्ति काम करने पर व्यय नहीं हो पाती।

जो व्यक्ति जल्दी न मचाकर काम में लीन होकर उसे करता है, उसका मस्तिष्क पूरी शक्ति से काम में ही लगा रहता है। इस प्रकार उतने ही समय में उस काम पर अधिक शक्ति व्यय होती है। अतः काम अधिक होता है। साथ ही ध्यान एकाग्र रहने के कारण काम अच्छा भी होता है।

कुछ जल्दबाजों को तो मैंने यहां तक देखा है कि वे स्वयं कुछ करते ही नहीं, केवल दूसरों के लिए जल्दी मचाया करते हैं। ट्रेन पकड़नी हो, बस से कहीं जाना हो, या किसी सभा-सत्संग या निमंत्रण में ही सम्मिलित होना हो, वे शोर मचाने लगते हैं। “जल्दी करो, ट्रेन छूट जाएगी, बस निकल जाएगी, कार आ गयी है। जल्दी करो, समय हो गया है” इत्यादि।

ऐसे अवसरों पर जब शीघ्रता आवश्यक हो, भूलकर भी उतावली नहीं दिखानी चाहिये। शान्त

मन से तैयारी कीजिए। बच्चों को तैयार कराइये। और तब घर से निकलिए।

कहीं ऐसा न हो कि जल्दी करने के चक्कर में आप कोई आवश्यक चीज भूल जाएँ, या कोई काम ही करने से रह जाए।

एक बार मेरे एक मित्र सपरिवार किसी निमन्त्रण में सम्मिलित होने जा रहे थे। और इसी उतावली के कारण वे घर खुला छोड़कर चले गये। किसी को ताला लगाने की सुध ही न रही। दूसरे दिन जब लौटे, तो उनका सर्वस्व लुट चुका था।

काफी इत्मीनान से अपने काम कीजिए। उन्हें समय रहते ही शुरू कीजिये और समय रहते ही पूरे कीजिए। अपने काम को चूँ-चूँ का मुरब्बा न बनाइए। काम करना एक कला है। उसे कला की भांति ही धीरज, शांति लगन और बुद्धिमत्तापूर्वक कीजिये। निश्चय ही इससे आपको वही आनन्द मिलेगा जो किसी कलाकार को एक नयी कलाकृति का निर्माण करने से मिलता है।

जल्दबाजी से काम बिगड़ जाता है। इसलिए उतावली कभी न कीजिए। ❀

पृष्ठ सं. 22 का शेष—

कर रहे थे। महर्षि जी के प्रति उनके हृदय में अगाध श्रद्धा थी। एक दिन जिज्ञासावश उन्होंने महर्षि जी से प्रश्न किया—“स्वामीजी, बहुत से विद्वान् आपसे शास्त्रार्थ करने आते हैं। क्या वे सभी सत्यासत्य का निर्णय करने में असमर्थ हैं?”

महर्षि जी हंस पड़े! बोले—“वे लोग सत्यासत्य को जानते हैं, परन्तु मानते नहीं हैं। मान लेने से उन्हें अपना धन्धा चौपट हो जाने का भय है। जो मान लेते हैं, वे उसके प्रचार में लग जाते हैं।

यह लेख समझदार व्यक्तियों के लिए अति लाभदायक है। इसको पढ़ने के बाद मुझे विश्वास है कि काफी लोग वैदिक धर्म के प्रति आकर्षित होंगे। ❀

वृद्धा ने सिकन्दर को बदल दिया

एक दिन सिकन्दर ने उस नगर को चारों ओर से घेर लिया जहाँ वह वृद्धा रहा करती थी। भूख लगने पर उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया। वृद्धा ने दरवाजा खोला तो देखा कि सामने सैनिक वेष में एक व्यक्ति खड़ा है। वह समझ गई कि यह सिकन्दर ही है। सिकन्दर ने कहा—‘माँ मैं भूखा हूँ, कुछ खाने को दो।’ वृद्धा अन्दर गई और कुछ पलों के बाद कपड़े से ढकी एक थाली लेकर लौटी। सिकन्दर ने कपड़ा हटाया तो उसमें भोजन की जगह सोने के जेवरात देखकर बोला—‘मैंने खाना माँगा था। क्या ये जेवरात मेरी भूख मिटा सकते हैं? वृद्धा ने निर्भीकता से कहा—‘यदि तुम्हारी भूख रोटियों से मिटती, तो तुम अपना देश छोड़कर यहाँ सम्पत्ति लूटने क्यों आते? मेरे जीवन की कमाई का यह सोना ले जाओ, लेकिन मेरे नगर पर चढ़ाई मत करो।’

वृद्धा के शब्दों ने सिकन्दर को झकझोर दिया। वह उसके चरणों में झुक गया। वृद्धा ने उसे भरपेट भोजन कराया। सिकन्दर उस नगर को जीते बिना ही वापिस लौट गया। ❀

अपने विषय में अशुभ-चिन्तन न कीजिये

ऐसे अनेक व्यक्ति देखने में आते हैं, जो इसी कारण सदैव अस्वस्थ रहा करते हैं; क्योंकि वे हृदय से अधिक अपने विषय में अहितकर चिन्तन किया करते हैं। अहित का चिन्तन करना, निराश रहना, अपने भविष्य के विषय में बुरी बातों की कल्पना करना और शोक-विषाद में डूबे रहना एक मानसिक व्याधि है। इस व्याधि की जड़ें रोगी के अन्तःप्रदेश में होती हैं। जरा-जरा सी व्याधि को बढ़ा-बढ़ा कर दिखाना या उन मामूली बीमारियों के जरिये भयानक व्याधियों के मौजूद होने का सन्देह करना, उन व्यक्तियों के स्वभाव का एक विशिष्ट अंग हो जाता है। मामूली दर्द में ही हाय-हाय कर ये तिल को तोड़ बना देते हैं।

यदि इन चिन्तन-प्रधान रोगियों का मनोविश्लेषण करें, तो आपको ज्ञात होगा कि ये चिन्ता, भय, शंका, बहम, अस्थिरता, अधिक औत्सुक्य इत्यादि व्याधियों के अङ्ग हैं। इन्हें विशेषरूप से तो यह भय रहता है कि हम कहीं बीमार न हो जायें, हमें कोई असामान्य रोग न हो जाय। इनमें निश्चय बल अत्यन्त कम होता है। धारणा-शक्ति क्षीण होकर शून्य को पहुँच जाती है। अत्यधिक चिन्तन का कारण अन्तःकरण में दबी हुई भय की टीस की अभिव्यक्ति है। दबी हुई भावनाएँ जरा सा प्रोत्साहन पाकर अनेक छोटी-मोटी शंकाओं से सम्मिश्रित हो मन के ऊपरी स्तर पर उद्भूत होती हैं। चिन्तन उस भय का रूपान्तरित रूप है। वास्तविक भय अव्यक्त प्रदेश में छिपा रहता है। यही छिपी हुई भावना रोग रूप में अभिव्यक्त होती है तथा अनेक मानसिक रोगों का कारण बनती है।

अशुभ-चिन्तन मानसिक दौर्बल्य का प्रतीक है, कष्ट और क्लेशों को निमन्त्रण है, इससे मन की कार्य करने वाली शक्तियाँ विनष्ट होती हैं, मनुष्य का उत्साह मारा जाता है, आशावादिता नष्ट होती है और वह कोई भी उत्कृष्ट कार्य नहीं कर पाता।

मनुष्य को चाहिए कि वह स्थितिबश अपनी भौतिक व्यवस्था को व्यवस्थित करते हुए अपनी आध्यात्मिक सम्पदाओं की अभिवृद्धि करता रहे, परमेश्वर के दिव्यानन्द में गोते लगाता रहे तथा आने वाली आपदाओं को प्रसन्नता से झेले। त्रस्त न हो।

आशावादिता वह महौषधि है, जो त्रिविध रोगों को विनष्ट करती तथा मनुष्य को दैवी तेज से पूरित करती है। इससे मनुष्य के अनेक संशय दूर होते हैं तथा आन्तरिक प्रकाश होता है। मनुष्य का धर्म है कि वह केवल शुभ सोचे तथा शुभ का ही प्रसार करे।



योग चिकित्सा का मूल तत्त्व

लेखक: पं. अत्रिदेव गुप्त भिषग्वल्ल

वीर्य, ओज और आर्तव

उत्पत्ति- शुक्र और शोणित के संयोग से गर्भ उत्पन्न होता है, अब प्रश्न होता है कि शुक्र क्या है? कैसे पैदा होता है? क्या गुण हैं? इत्यादि। आर्तव क्या है? वह कहां से आया और कैसे उत्पन्न होता है?

मैं अशित, पीत, लीढ, खादित इन चार रूप में भोजन करता हूँ, वह भोजन दांतों से चर्वण होकर तथा थूंक के साथ मिल जाता है। अब वहां मधुर रस उत्पन्न होता है वहां से भोजन प्रणाली होकर आमाशय में आता है जहां कि आमाशयस्थ समान वायु तथा पाचक पित्त (नव्य मत में उद्रहरिकाम्ल) क्रिया करता है। जिससे कि भुक्त द्रव्य के दो भाग अर्थात् प्रसाद और किट्ट (मल) हो जाते हैं। प्रसाद रस (नव्य मत में काइल) तथा किट्ट मलमूत्र होते हैं।

अब यह रस व्यान वायु से प्रेरित होकर शरीरस्थ रस (लिम्फ नव्य मत में प्राच्यमत में लसीक) में पहुंचता है वहां रसस्थ अग्नि पित्त उष्मा इस पर क्रिया करती है इसके भाग हो जाते हैं। यथा मलभाग, कफ, स्थूलभाग रस और सूक्ष्मभाग रक्त होता है। मलभाग कफ शरीरस्थ रस (नव्यमत में लिम्फ) की वृद्धि करती है और सूक्ष्मभाग रक्त व्यान वायु से प्रेरित होकर रक्त के स्थान यकृत और प्लीहा में पहुंचते हैं। वहां रक्तस्थ ऊष्मा अब इस पर क्रिया करती है। इससे मलभाग पित्त, स्थूलभाग रक्त और सूक्ष्मभाग मांस उत्पन्न होता है फिर व्यान वायु से प्रेरित होकर यह शरीरस्थ मांस में पहुंचती है, वहां मांसस्थ उष्णिमा से मलभाग, नासिका, घ्राण, नेत्र के मल तथा स्थूलभाग मांस, सूक्ष्मभाग मेद उत्पन्न होता है। अब व्यान वायु से प्रेरित सूक्ष्म भाग शरीरस्थ मेद में पहुंचता है। उसकी उष्णिमा से मलभाग स्वेद-स्थूलभाग मेद और सूक्ष्मभाग अस्थि उत्पन्न होती है। व्यान वायु से प्रेरित सूक्ष्म भाग अस्थिस्थान में पहुंचता है उसकी उष्णिमा से मलभाग केश-श्मश्रु लोभ-स्थूलभाग अग्नि सूक्ष्मभाग मज्जा उत्पन्न करता है। व्यान वायु से प्रेरित होकर सूक्ष्मभाग शरीरस्थ मज्जा में पहुंचता है। मज्जा की उष्णिमा से इसके मलभाग नयन-पुरीष त्वचा का स्नेह, स्थूलभाग मज्जा, सूक्ष्मभाग वीर्य (शुक्र) उत्पन्न होता है। यह सूक्ष्मभाग व्यान वायु से प्रेरित होकर शरीरस्थ शुक्र में पहुंचता है उसकी उष्णिमा से अब मल बाहर नहीं होता जिस प्रकार स्वर्ण हजार बार अग्नि में तपाने से निर्मल हो जाता है और फिर इसमें मल नहीं रहता ठीक उसी प्रकार अब मल नहीं निकलता अपितु दोही भाग अर्थात् स्थूल भाग शुक्र और सूक्ष्मभाग ओज बनता है।

स्त्रियों में रस से ही रक्त आर्तव शोणित बन जाता है, परन्तु गर्भाशय तक पहुंचने में उसे एक

मास लगता है। यह आर्तव बारह वर्ष की आयु से लेकर 50 वर्ष की आयु तक रहता है।

“रसादेव स्त्रियो रक्तं रजः संज्ञां प्रवर्तते। -धन्वन्तरिः
गर्भाशयं पूरयति मासाद्बीजाय कल्पते॥ -विश्वामित्रः

थोड़ा सा विचार-

तीन प्रश्नों पर विचार करना है-

1. उष्णिमा का जिससे कि उपरोक्त परिवर्तन होते हैं।
2. शुक्र के गुण तथा लक्षण।
3. ओज कहां है उसके गुण, स्थान, लक्षण।

उष्णिमा- अग्नि के लिये अत्रि का निम्न वचन स्मरण करता हूं।

“आयुर्वर्णौ बलं स्वास्थ्यं उत्साहापचयौ प्रभा।
ओजस्तेजोऽग्नयः प्राणाश्चोक्ता देहाग्निहेतुकाः॥
शान्तेऽग्नौ म्रियते युक्ते चिरं जीवत्यनामयः।
रोगी स्याद्विकृते मूलमग्निस्तस्मान्निरुच्यते॥”

निरुक्त में अग्नि की व्युत्पत्ति-“अग्निः अग्रणीः भवति।” यह की है। धन्वन्तरि ने जाठराग्नि को भगवान् ईश्वर अन्नापाचक आदि संबोधनों से स्मरण किया है। उपरोक्त वचन के कारण-

अग्निमूलं बलं पुंसां रेतोमूलं च जीवितम्।

यह वचन वाग्भट ने स्वीकार किया है। अस्तु।

शरीर के अन्दर जो उष्णिमा है वही अग्नि है। उसके न रहने से शरीर शीत (ठण्डा) हो जाता है जिसको कि मृत्यु कहते हैं।

जिस प्रकार बाह्य अग्नि राख भस्मादि से आवृत होने पर दीप्त नहीं हो सकती। उसी प्रकार कफादि से आवृत होने पर जाठरस्थ अग्नि भी दीप्त नहीं होती है। उसे समावस्था कहते हैं। और जिस प्रकार बाह्य अग्नि वायु से प्रज्वलित हो उठती है उसी प्रकार शरीरस्थ वात से शरीरस्थ अग्नि भी उद्दीप्त हो जाती है। जैसे कि भस्मक या मधुमेह में-

“समानेनाऽवधुतोऽग्निरुदर्यः पवनेन तु। -काले
भुक्तं समं सम्यक् पचत्यायुर्विवृद्धये॥ -अत्रिः

संगति-

पाठकवृन्द! आइये आत्रेय संप्रदाय उक्त उष्णिमा की नव्य मत से परीक्षा करे। नव्य रसायन शास्त्र हमें कुछ बातें बताता है। यथा-

1. दो या दो से अधिक वस्तुओं के मेल से यदि तीसरी वस्तु उत्पन्न हो जिसमें कि मूलवस्तु के

गुण न मिले तथा सुगमता से पृथक् न हो सकें तो वह रासायनिक मिश्रण हैं।

2. रासायनिक मिश्रण के लिये उष्णिमा की आवश्यकता है वह या तो स्वयं वस्तुओं में उत्पन्न हो या बाह्य हो।

3. दो वस्तुओं के संयोग से उष्णिमा उत्पन्न होती है। यथा दोनों हाथों के संघर्ष से।

4. सन्तप्त पदार्थ में ताप विकिरण शक्ति स्वाभाविक है। यथा एक लोहे का तप्त रक्त वर्ण गोला वायु में रक्खा धीरे-धीरे शीत हो जाता है अर्थात् उसने अपनी उष्णिमा समीपस्थ वायु मंडल को दे दी। किसी पदार्थ में अधिक है किसी में कम।

रसायन की भांति शरीर तत्व (Physiology) भी कुछ नियम बताती है यथा-

1. शरीर के अन्दर हर समय टूटना-बनना रहता है अर्थात् पुराने कोष्ठ (Cells) टूटते रहते हैं और उसके स्थान पर नवीन बनते रहते हैं। जिसको (Metabolism) और (Ketabolism) कहते हैं।

2. यह अवस्था स्वस्थ अवस्था में नियत परिमाण में होती है परन्तु विषादि कारणों से (बाह्य तथा अन्तः) इसमें परिवर्तन आ जाता है। अर्थात् या तो पुराने कोष्ठ टूटने कम हो जाते हैं या अधिक टूटते हैं। इसी प्रकार नये कोष्ठ कम बनते हैं या अधिक बनते हैं। दोनों ही अवस्था (Pathologic) निदान हैं।

3. मेरी टांग पर गेंद लगती है उससे वह स्थान शोथयुक्त हो जाता है। उसमें अन्य स्थान से कुछ उष्णिमा बढ़ जाती है। अर्थात् उष्णस्पर्श है। इसका कारण शरीर के अन्दर युद्ध या संघर्षण है। अर्थात् शरीर बाह्य विष को जिसने कि शोथ उत्पन्न की है बाहर करना चाहता है और लड़ते हैं। यदि वह जीत जाते हैं तो शोथ कम हो जाती है। स्थान स्वस्थ हो जाता है।

यदि हार जाते हैं तो शोथ बढ़ती है और शोथ के साथ उष्णिमा भी बढ़ती है। अब इस उष्णिमा की तापविकरण शक्ति स्वाभाविक होने से रक्त को तथा समीपस्थ मांस प्रदेश को उष्णिमा पहुंचती है। जिससे कि शरीरस्थ रक्त मांसादि भी उष्ण हो जाते हैं जिसको कि ज्वर कहते हैं।

4. मुझे बहुत दिनों तक ज्वर आता है प्लीहा और यकृत हो जाते हैं। उससे शरीरस्थ मलपित्तादि बाहर नहीं आते अपितु वहीं रक्त के बनानेवाले आंतों पर दबाव डालते हैं जिससे रक्त बनना बन्द हो जाता है। इससे शरीर में रक्त की कमी हो जाती है। अर्थात् अवयवों को पूर्ण रक्त मिलना बन्द हो गया जिससे उनके काम में बाधा हुई। अर्थात् पुराने कोष्ठ अधिक मात्रा में टूटे परन्तु बने नहीं इसके न बनने से उष्णिमा में अन्तर आया। इस अवस्था को क्षीणावस्था कहते हैं। जैसे यक्ष्मा रोग की।

5. यह सब परिवर्तन जीवितावस्था में ही होते हैं।

6. और जब पुराने कोष्ठ अधिक मात्रा में टूटें, नवीन कोष्ठ सर्वथा बनने बन्द हो जावें तो शरीर मृत हो जाता है।

पाठकवृन्द! आपने देखा, कि शरीर में हर समय रासायनिक क्रिया हो रही है। जिसके लिये उष्णिमा। अग्नि की आवश्यकता है जो कि या तो रासायनिक क्रिया से उत्पन्न होती है या शरीरस्थ उष्णिमा है।

अब यदि उस उष्णिमा में किन्हीं कारणों से परिवर्तन आ जावे तो रोग उत्पन्न हो जाता है और जब सर्वथा शान्त हो जाता है तो मृत हो जाता है।

रस से रक्त, रक्त से मांस आदि बनना स्वाभाविक रासायनिक क्रिया है। जिसमें उष्णिमा की आवश्यकता है। वह उष्णिमा स्वयं या शरीरस्थ है। उष्णिमा की ताप विकरण शक्ति स्वाभाविक होने से शरीर के प्रत्येक स्थान पर (98.4 F) एफ् ही ताप परिमाण मिलता है। परन्तु बाह्य तथा निज कारणों से इस रासायनिक क्रिया में भेद आता है जिससे कि उष्णिमा में भी अन्तर आ जाता है जो कि निदानावस्था को उत्पन्न करती है वही रोग है। अब कृष्णात्रेय का वचन पूर्णतया संगत हो जाता है।

“शातेऽग्नौ म्रियते युक्ते चिरं जीवत्यनामयः।

रोगी स्याद्विकृते, मूलमग्निस्तरस्मान्निरुच्यते॥

उपरोक्त कारणों से सही भगवान् धन्वन्तरि ने अग्नि को ईश्वर-भगवान् आदि शब्दों से संबोधन किया है।

शुक्र-

इसी को वीर्य तथा तेज शब्द से शास्त्र में कहा है। इस शुक्र से अतिरिक्त शरीर में कोई तेजस् पदार्थ नहीं है। यथा शालाक्य तन्त्र में पढ़ता हूं-

दृष्टिस्तेजोमयी प्रोक्ता शुक्रं तेजश्च केवलम्।

तस्मादृष्टिबलापेक्षी तेजो वृद्धिं समाचरेत्॥

वीर्य शब्द का व्युत्पत्तिरूप लक्षण आचार्य ने निम्न किया है-

“वीर्यं तु क्रियते येन या क्रिया-

नावीर्यं कुरुते किञ्चित्सर्वा वीर्यकृता क्रिया॥”

शरीर में जो कुछ क्रिया अर्थात् राजस गुण है, वह वीर्य है, जो सात्विक गुण है वह ओज है। उस वीर्य से ही शरीर की सम्पूर्ण क्रियाशक्ति हो रही है। उसके बिना शरीर में कुछ क्रिया नहीं, अपितु जीवन है।

शुक्र का स्थान तथा भरण-जिस प्रकार की फूल के डीडे में गन्ध का अस्तित्व प्रतीत नहीं होता और उसके विकसित होने पर गन्ध का पता लगता है उसी प्रकार सोलह वर्ष से पूर्व शुक्र का पता नहीं लगता। स्त्रियों में बारह वर्ष से पूर्व आर्तव का पता नहीं लगता।

(पुरुषों में जो बारह वर्ष से पूर्व श्वेत स्राव आता है वह शुक्र नहीं अपितु अष्टीला ग्रन्थि का स्राव है, या अन्य एल व्युमन आदि होता है। उसमें शुक्राणु नहीं होते।)

जिस प्रकार के दही के किसी भाग विशेष में सर्पि और इक्षुके किसी भाग विशेष में रस उपस्थित नहीं अपितु सम्पूर्ण दधि में सर्पि एवं सम्पूर्ण इक्षु में रस उसी प्रकार शरीर के किसी भाग विशेष में शुक्र नहीं अपितु सम्पूर्ण शरीर में उपस्थित है और जिस प्रकार मन्थनादिपीडनादि क्रिया विशेष से दही से घृत और इक्षु से रस पृथक् किया जाता है ठीक उसी प्रकार हर्ष-स्मरण-संकल्पादि कारणों से अण्ड की क्रिया द्वारा जिस प्रकार वसु में से पानी चूता है। उसी प्रकार शरीर से शुक्र क्षरण होता है।

-(शेष अगले अंक में)

ओ३म्

सफलं भवतु

(युवाओं की भौतिक और आध्यात्मिक सफलता के लिए शिविर)

स्थान- दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर, रोहतक (हरियाणा)

दिनांक- 16 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2019 तक (बुधवार से रविवार तक)
(कार्तिक कृष्ण तृतीया से कार्तिक कृष्ण षष्ठी 2076)

माननीय प्रियजन,

होने जा रहा है एक ऐसा शिविर

जो आग जगा दे कुछ करने की	✽	जो आग जगा दे और बढ़ने की
जो भावना भर दे ईश्वरभक्ति की	✽	जो भावना भर दे दुःखमुक्ति की
जो आत्मशक्ति दे राष्ट्रभक्ति की	✽	जो आत्मशक्ति दे विश्व हित की
जो प्रेरणा भर दे गुरुभक्ति की	✽	जो प्रेरणा भर दे मातृ-पितृ सेवा की
जो योजना दे दुर्गुणों को हटाने की	✽	जो योजना दे जीवन लक्ष्य की
जो रचना कर दे सुसंस्कारों की	✽	जो रचना कर दे योगमय जीवन की
जो कामना दे मन को वश करने की	✽	जो शुभकामना है दर्शन योग परिवार की

इसलिए तो सूचना है “सफलं भवतु” शिविर की।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे भविष्य के कर्णधार ऐसे युवा जो आगे और ऊँचा उठना चाहते हैं या वर्तमान में किसी कारण रूक गए हैं या हताश-निराश हैं या दुःखी हैं उनकी भौतिक और आध्यात्मिक सफलता के लिए कई विद्वानों के अनुभवों, प्रेरणाओं, मार्गदर्शन और प्रशिक्षण के साथ सुन्दरपुर, रोहतक में आयोजित हो रहा है “सफल भवतु” शिविर।

दिनांक 15 अक्टूबर को सायंकाल 4 बजे तक पहुंचना है। समापन 20 अक्टूबर को दोपहर लगभग 01 बजे तक।

आयु-17 से 45 वर्ष, योग्यता-न्यूनतम 12वीं या समकक्षा। आवेदन की अन्तिम तिथि- 8-10-2019 (शिविरार्थी सीमित संख्या में लिये जाएंगे तथा प्रथम आवेदक को प्राथमिकता दी जाएगी) शिविर शुल्क: स्वैच्छिक।

-शेष पृष्ठ सं. 34 पर

॥ ओ३म् ॥

महर्षि पतंजलि के योगदर्शन और भारत के अन्य प्रज्ञा स्रोत-वेद, उपनिषद् आदि पर आधारित

॥ क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर ॥

दिनांक: 16.11.2019 (शुक्रवार) से 24.11.2019 (रविवार) तक

पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में मार्गशीर्ष कृष्ण 4 से मार्गशीर्ष कृष्ण 12, वि. सं. 2076 तदनुसार 16 नवम्बर सायं काल से 24 नवम्बर 2019 तक क्रियात्मक रूप से ध्यान-योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर के मुख्य प्रशिक्षक

पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती
आचार्य दिनेश जी

▲ स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती
▲ स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती
▲ आचार्य प्रियेश जी आदि.....

आवासीय शिविरार्थी 16 नवम्बर सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें।

शिविर तथा वार्षिक उत्सव का समापन 24 नवम्बर को मध्याह्न लगभग 1 बजे तक होगा।

शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध, ममत्व को हटाने जैसे अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः 4.00 बजे रात्रि 9.30 बजे तक रहेगी। जिसमें विशेष कक्षा को छोड़कर पूर्ण मौन व्रत का पालन करना अनिवार्य होगा। शिविर में भाग लेने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि-

1. वह रोगी न हो, धूम्रपान आदि व्यसनो से रहित हो।
2. कम से कम 10 (दसवीं) कक्षा तक नए व्यक्तियों को प्रवेश के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।
3. 15 से 60 वर्ष तक आयु वाले, पठित और नए व्यक्तियों को प्रवेश के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।
4. आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाएंगे तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जाएगी। दूर से आने वाले शिविरार्थी अपना वापसी का रेलवे आदि आरक्षण पूर्व ही करा लें।

5. आवासीय रूप में शिविर में भाग लेने के इच्छुक सज्जन 10 नवम्बर से पूर्व अपना विवरण www.darshanyog.org में पंजीकृत करें अथवा लिखित आवेदन पत्र डाक या ई-मेल या व्हाट्सएप द्वारा प्रेषित करें और स्वीकृति प्राप्त होने पर अपना पंजीकरण व आरक्षण माने। अन्यथा शिविर में स्थान आरक्षित नहीं माना जाएगा।
6. शिविरार्थी को शिविर काल में चलभाष (मोबाइल) करने की अनुमति नहीं है। अपना चलभाष कार्यालय में जमा करवाना पड़ेगा।

शिविर शुल्क- स्वैच्छिक।

स्थान, आयोजक व निवेदक

दर्शन योग महाविद्यालय

महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, जलेबी रोड, जींद वाईपास के पास, सुन्दरपुर, रोहतक-124001 (हरियाणा)

चलभाष- +91-7027026175, 7027026176

Email-darshanyogsundarpur@gmail.com

पृष्ठ सं. 32 का शेष-

पंजीकरण- Email-darshanyogsundarpur@gmail.com & online Application- www.darshanyog.org

शिविर निदेशक- पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक। शिविर प्रशिक्षक- स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, आचार्य ईश्वरानन्दजी, डॉ० राधाबल्लभजी, श्री अरविन्द राणा जी, स्वामी शतानन्द जी, आ. प्रियेश जी आदि।

विषय- सफलता, पूर्ण व्यक्तित्व विकास, स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, सुखी जीवन के सूत्र, जितेन्द्रियता, ध्यान, वैदिक सिद्धान्तों का परिचय, आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से चर्चा, शंका समाधान एवं वीडियो शो आदि, आत्म चिन्तन।

निवेदक व आयोजक

दर्शन योग महाविद्यालय

महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक (हरियाणा)

चलभाष- +91-7027026175, 7027026176



पर ही संतान संस्कारित होकर समाज और राष्ट्र का भला कर सकती है। बिना शिक्षा के गृहस्थ जीवन नरक के तुल्य हो जाता है, स्वामी दयानन्द का तत्कालीन समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उस समय के समाज के ठेकेदारों ने महर्षि दयानन्द के अभियान का भरपूर विरोध किया। पर महर्षि दयानन्द अपने इस अभियान से जरा भी विचलित नहीं हुए उनके अनुयायियों ने जगह-जगह कन्या विद्यालय स्थापित किये और जिन कन्याओं का वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। वो केवल वेद विदुषी ही नहीं बनी अपितु ब्रह्मा पद पर सुशोभित होकर बड़े-बड़े यज्ञों का संचालन करने लगी आगे चलकर उनकी इस अभियान को सरकार ने स्वीकार किया और कानून भी बना दिया, जिससे नारी जाति को नया बल मिला और समाज के उद्धार का मार्ग प्रशस्त हो गया।

भारतीय समाज में बहुत बड़ा वर्ग शोषित और पीड़ित था उन्हें समाज ने स्वाभिमान में जीने का अधिकार भी प्राप्त नहीं था। उनका जीवन पशुओं से भी गिरा हुआ था। जिससे वे लोग ईसाई और मुसलमान बन रहे थे। महर्षि दयानन्द ने उनकी भरपूर बकालत की और जो लोग कुलाभिमानी होकर उन्हें अछूत कहते थे। उन्हें इस कुकृत्य के लिए कड़ी फटकार लगायी उनके अनुयायियों ने उन अछूत भाईयों को न केवल शिक्षित किया अपितु उन्हें वे सारे अधिकार प्रदान किये जो तत्कालीन धर्माभिमानी ब्राह्मणों को प्राप्त थे। उनके इस प्रयास से दलित वर्ग ने भी वैदिक शास्त्रों को पढ़ा और शास्त्री आचार्य बनकर धार्मिक मंचों पर ब्रह्मापद को सुशोभित किया। अपने बच्चों के संस्कार भी वैदिक विधि से कराने लगे। महर्षि दयानन्द के इस पवित्र अभियान का प्रभाव यह हुआ कि सरकार ने छुआ-छूत को अपराध माना और उसके लिये कठोर कानून बनाया। दलित वर्ग को आरक्षण देकर उनके अधिकारों को सुरक्षित किया। आज हम देखते हैं कि हमारा वो वर्ग राष्ट्र और समाज की उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

महर्षि दयानन्द ने चमत्कारवाद के पाखण्ड में उलझे समाज को भी दिशा दी उन्होंने कहा कि अपनी बुद्धि पर पड़े हुये तालों को खोलो उन्होंने लोगों को बताया कि संस्कृत में लिखी हुई हर एक पुस्तक शास्त्र नहीं होती इसलिए पुराण आदि संस्कृत में लिखे ग्रन्थ कपोल-कल्पित और झूठे हैं। उन्होंने अपनी मान्यताओं के अनुसार लोगों से कहा कि जो कुछ भी सृष्टिक्रम के विरुद्ध है वह मान्य नहीं है। जिस ग्रन्थ में सृष्टिक्रम के विरुद्ध बात लिखी हो वह ग्रन्थ ऋषियों का बना नहीं है। अपितु जाल ग्रन्थ है और जिस ग्रन्थ में ईश्वर के गुणों के विपरीत ईश्वर को बताया जाये वह भी ग्रन्थ ऋषियों का न होकर जाल ग्रन्थ है। इस कसौटी पर उन्होंने लोगों को सत्य और असत्य ग्रन्थों को समझने की बुद्धि दी। पाखण्ड का खण्डन करते हुए ढोंगियों के जाल में फंसी हुई जनता को निकाला।

महाकवि शंकर ने ठीक लिखा है कि महर्षि दयानन्द के आने से-

तामसी थोथे मतों की मोह-माया हट गई।
 ऐंठ की पोली पहाड़ी खण्डनों से फट गई।
 छूत-छैया की अछूती नाक लम्बी कट गई।
 लालची, पाखण्डियों की पेट पूजा घट गई।
 ऊत भूतों का बखेड़ा डूब मरने को गया।
 देखलो लोगों दुबारा, भारतोदय हो गया।।

इस प्रकार देखा जाये राष्ट्रीय जीवन से लेकर व्यक्ति के जीवन तक कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिस क्षेत्र में महर्षि दयानन्द का अनुपम योगदान न रहा हो, दीपावली के अवसर पर उनका बलिदान दिवस है। हम सब कृतज्ञता पूर्वक उनका स्मरण करें और उनके बताये पथ पर चलें। ❀

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण (सजिल्द)	220.00	भ्रांति दर्शन	20.00	गायत्री गौरव	5.00
शुद्ध रामायण (अजिल्द)	170.00	शान्ता	20.00	महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
शंकर सर्वस्व	120.00	संध्या रहस्य	20.00	सफल व्यक्तित्व	5.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00	गीता तत्व दर्शन	20.00	जीजा साले की बातें	5.00
शुद्ध कृष्णायण	80.00	गृहस्थ जीवन रहस्य	20.00	विषपान और अमृत दान	5.00
विदुर नीति	40.00	श्रीमद् भगवत गीता	20.00	पंचांग के गुलाम	5.00
वैदिक स्वर्ग की झाकियाँ	40.00	दयानन्द और विवेकानन्द	15.00	सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (प्रेस में)	
चाणक्य नीति	40.00	इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ	12.00	नमस्ते ही क्यों	10.00
महाभारत के प्रेरक प्रसंग	40.00	बाल मनुस्मृति	12.00	महिला गीतांजलि	15.00
नित्य कर्म विधि (प्रेस में)		ओंकार उपासना	12.00	पुराणों के कृष्ण	12.00
वेद प्रभा	30.00	आर्यों की दिनचर्या	12.00	भागवत के नमकीन चुटकुले	8.00
शान्ति कथा	30.00	शुद्ध सत्यनारायण कथा	15.00	आदर्श पत्नी	10.00
भारत और मूर्ति पूजा	30.00	दादी पोती की बातें	10.00	मानव तू मानव बन	8.00
यज्ञमय जीवन	30.00	दण्डी जी का जीवन पथ	10.00	ऋषि गाथा	4.00
दो बहिनों की बातें	30.00	क्या भूत होते हैं (प्रेस में)		सर्प विष उपचार	4.00
दो मित्रों की बातें (प्रेस में)		महाभारत के कृष्ण	15.00	चूहे की कहानी	4.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00	ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00	उपासना के लाभ	4.00
चार मित्रों की बातें	20.00	सच्चे गुच्छे	8.00	भगवान के एजेन्ट	3.00
भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	20.00	मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00	दयानन्द की दया	3.00
मील का पत्थर	20.00	वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00	शांति पथ	2.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2019 के लिये वार्षिक शुल्क 150/- रुपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/- भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

**बुक-पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका**

सेवा में,

.....
.....
.....
.....
.....
..... पिन कोड

पत्र व्यवहार का पता :-

**व्यवस्थापक - कहैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन**

डाकघर- गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबा. 9759804182